

प्रबो. २१ तदप्येकोकरी ॥ तहां श्री भागवत मेक है है ॥ योगमां पा
 मुपाश्रितै ॥ भगवान् जोगमाया को आश्रय कीये ॥ तवरा
 सलीला नरी ॥ काहे तेरा सलीला के पति श्री स्वामी नी
 जी है ॥ इनके संबंधु आश्रय विना होय नाही ॥ ताते सुक
 देव जी राजसभा में सब प्रकार करि के रक्षि वेवहे ॥ हं ह्य
 रिषि राज रिषि कर्म कांजी ॥ जोगाभ्यासी तिनके आगे
 श्री स्वामी नी जी को नाम ली योन जाय ॥ ताते ससको प्र
 संग डखल तरस भयो ॥ सोर ह्यो न गयो ताते जोगमा
 या कहें ॥ माया प्रभु के दोष है ॥ एक अजोय माया स
 ष्टिक नोर्थ ॥ सोर सी रूप आजा को नो है ॥ एक जोग
 माया प्रेम लक्षणां भक्ति रूप सो जे प्रभु ते से ही
 जोग रूप माया ॥ ताते गोपाल सगाए है ॥ सो मनु
 दर माया दासी बेमूरति प्रगटावी ॥ तामे पाहिली न
 पासी खभु भग श्री हरि ने मन भावी ॥ पह स्वामी नी
 रूप तिनको आश्रय प्रभु कीये ॥ तवरा सलीला नरी सो
 प्रथम उड राज की लीलानि त्यासि धारि तिन को रस

श्रुतिरूपाकुं मारिका के लिई सकी मांनो दिक् गर्व नयो ॥
 ताते पीछे ससांक चंद्र मांकी खह महिनां की रात्रि करि
 श्रुतिरूपाकुं मारिका को दान दीये ॥ ताते सरद समय
 मुकट धरत हेरास करत है ॥ सो उड राज की लीलानि
 त्यासि धारि गिर राज के आस पास परा सोली चंद्र
 सोर वर द्यादि बीच में सीत काल ॥ सो कें रामे वजन
 कनित्य सो कोर मन ॥ पीछे वेसाप सुदि एन्यो को
 खह महीनां सरद एन्यो ते होत है ॥ ताते फागुन चैत्र
 वेसाप ये मुकट धरत है ॥ सो श्रुतिरूपाकुं मारिका
 की रासलीला ससांक चंद्र मांगीत गोविंद में जोगाये
 वंसी वट हंदावन आदि मांन सरोवर की वसंतुरे तुकी
 रासलीला प्रकार ननेक नावहे ॥ श्री यमुना जी रुक
 लीला संबंधी पातै है ॥ जो इन विना जल स्थल विहार न
 होइ ॥ ताते प्रबोधनी को विवाह खेल है ॥ ताते लाल
 बागा नुराग डीष हं कोर स रूप नावहे ॥ मंडफ चौ
 री रूप ॥ परिक्क मां बाह पीछे केरा फिरत है ॥ कहें स्वत

प्रबो. कुलह श्रीचंद्रावलीजीकेनावते॥ पाछेकारसीकोश्रीगि
५२ स्थरजीकोश्रीरघुनाथजीकोजन्मोत्सवहै॥ तातेराज
भोगन्यावेतववधाहीगाइये॥ राजभोगमेसेवषीर
छाछिकेवरा॥ तीनहूडा॥ जसेवी॥ सेवकेलडवामेवा
ती॥ सुंदीसकरपारा॥ मीमोसाक॥ सिषरनचडी॥ सीरा
वांसोदी॥ बिलसारु॥ श्रारनित्यकोनेग॥ श्रीगिरध
रजीकीपाडुकाहोइ॥ तथाश्रीरघुनाथजीकीपाडुका
होइ॥ तोभंगन्यारो॥ प्रभुकेवरावरराजभोग
वे॥ एककरोरामेइधन्यो॥ तामेखेलिलगुड
केरूकमेलिधरिमारकंडेइजाकेचापते॥ राजभोग
सरेपीछेअरतीचूंनकीरीवडायासीमेधारियेउं
गियावारिअरतीकीजे॥ पाडुकाजीनहो॥ जोभक्त
कोतिलकअरतीकीजेअंगारसवप्रबोधनीकोरहे॥
अधिकमेएकसेहराधरे॥ पाछेनित्यकीरीत॥ का
रसीकोभोरहीराजभोगअरतीहोइ॥ कार्तिकस
दिपुंयो॥ तादिनजतपत्नीकीसांमिग्रीलगीकार

कारे॥ प्रथीपरअमृतधीहै॥ मत्पुलोकमेअवधराराजा
रूकमंगलकोलेइएनआरी॥ तवधीपीवेअरकछूनाही
तातेहोममेधीहोमतहै॥ तवदेवतांनकोपोहचतहै॥ मर्या
राभूमिमेवालकआएतवभरनेपीउतो॥ तवप्रथमरू
षिपासपवारे॥ उनसोनाहीकहवायउनकीमर्यासापा
समगापवालकनकोपोये॥ सोचीरहरनकेअध्यायसो
लग्यारिसिपुनीकोअध्यायहै॥ तातेकुंमारिकारिषपत्नी
केनावसांप्रभुकोसांमिग्रीनित्यनशीलिवावतहै॥ कार्ति
कहंनहोतहै॥ तातेश्रीगुसांडीजीटिपनीमोलिषेहै॥ जब
अरधमेरासलीलाकीऐ॥ तवपुष्टिपुष्टिपुरुषोत्तमवाहर
प्रगटहोइलीलाकीऐ॥ तवकुंमारिकाकेपीछेरिसिप
लीआरीहै॥ इन्हकोरोनदीएहै॥ तातेवतचर्यासोलग्यो
रिसिपत्नीकोअध्यायहै॥ अनमगायेतासमपना
प्राभूमिमेमथुराकेस्वरूपकोऊपरकी॥ प्रागटहैमर्या
रापुष्टिको॥ तातेवजनकनकासांमिग्रीनाहीलीऐ॥ वज
भक्तनकरसकेनोतापुष्टिपुरुषोत्तमहोहै॥ मर्यासामेपरा

प्र० ५३ शिखी विहार नित्य सिध है ॥ ताते रिस पत्नी को धर विराकी
 रें ॥ पंच ध्यासी में प्रष्टि समय सब को अंगीकार कीये ॥ ताते
 प्रष्टि मारग में एन्यो के दिन राज भोग में एक नही सांभिग्री
 तथा रोय धारिये ॥ पाछे आरस वनित्य की रीत ॥ **मार्ग सर**
वरी ॥ १ ॥ तेनै तनौ तन सीत काल की सांभिग्री आरोगत
 हैं ॥ कहें पूं सबरी ॥ १ ॥ तें सांभिग्री आरोगत हैं ॥ कहें जा दिन
 तें धन की संकांत होत हैं ॥ तव तें आरोगत हैं ॥ मुख्य पक्ष
 यह है जो मार्ग सर गोप्य मही नां है ॥ मार्ग सर सुदी ॥ ५ ॥ को
 चीर हूं भुचुराए है ॥ ताते मार्ग सर वरी ॥ १ ॥ तें कहे ॥ क
 ल्यांतर में ऐसे हैं ॥ मार्ग सर में कात्यायनी देवी को पूज
 न श्रुति रूपा को रूप ॥ पूस के मही नां भद्र काली को पूजन
 श्रीय मुनां जी को रूप ॥ माह में चीर हरन काये ॥ पीछे उस
 त होरी के मिसली लाकर न लागे ॥ कात्यायनी देवी श्री चं
 द्रावली जी तें प्रगरी है ॥ हज में आधि रैविक साक्ष रूप
 श्री जी की उरूप जा की आराधनां प्रभू हूं कुं मारिका
 सांभालि के पूजन करत है ॥ पर उकार न्य के रवि हैं ॥ सांभालि

चंद्रावली जी के स्वरूप को जानत है ॥ ताते पूजन करिय हव
 त मांग्यो जो हम को श्री जी की प्रतिकरो ॥ तव अपनों नाम
 छिपाव के लीये श्री चंद्रावली जी ने कही ॥ तुम कात्याय
 नी देवी के नाम ते हंत करो तुम्हारे मनोर्थ सब पूर न होइये
 तव आनंद पाय उरूप पूर्व कगावत श्रीय मुनां जी के उ
 पकार में जो इत को आरंभ कीने ॥ सो रात्र धडी रोय रहे ॥
 तव दोष धरी तें उरूप काल कहिये ॥ तस्य मय पूजा
 का सांभिग्री सिध करि ले जात है ॥ तुलसी रल सो रल सां
 द्रु नांमि की दाता के सर धासि के ले जात है ॥ सो मुख्य स्वां
 मीना को नाव ॥ तामे चंदन श्रुति रूपा के नाव ते हररी की गां
 व धरत है सो सुभे कए श्री चंद्रावली जी के श्री अंग
 को सुगंध है ॥ जल श्रीय मुनां जी के नाव ते ॥ धूप दीप प्र
 तिबंध को नास कहें ॥ कुं मकुं महे सो अनुराग रूप है ॥ त
 था विवाह प्रबोधनी को भयो सो वरन अंगीकार भयो ॥ आ
 वरण करि के अनुराग प्रगट भयो है ॥ अष्ट तपी रें
 गे हे सो सुख प्रीत जुगल स रूप के रस में रंगे ॥ चंचेली

संख्या
धनु
५४

कफूलश्रीचंद्रावलीजी॥ पीतचंचेलीश्रीस्वामिनीजीर
त्पारिकडालिपामेंलेप्रभकीलीलांगानकरतआपुस
मेंबांहजोयेंकोऊगलशहीदीएहें॥ यहभावमेंमग्नहो
इचलतहें॥ तबश्रीगुरुजीसखीरूपहोइसबसोंबांह
जोरिहेंप्रसन्नहोइचलतहें॥ तहांश्रीयमुनाजीकुंडप
केंठमेंश्रीचंद्रावलीजीकीसुंजहें॥ तहोरेवीमेंनीतरप्रभ
आपुबेबिकेंकुंमारिकाकीसांमिग्रीअंगीकारकरतहें॥
तातेंसीतकालमेंमांगलसरमेंमंगलासमय होहोभो
गआवतहें॥ अवसीतकालकीनैतनसांमिग्रीकोभा
वकहतहें॥ प्रबोधनीकोचारोजूपपतिफोविवहिया
तामेंसगरीस्वामिनीजीतजकीहें॥ तिनकोभपोसोया
हपीछेंबरकीओरकोडुलहिनकीओरकोभोजभया
चहिये॥ प्रथमजवसांमिग्रीकोआरंभकरे॥ तबवा
लभोगकेकूहापासतथासखीरसोशीपासरोऊगे
रआछेंपोतिकेंकोरीहरदीकोचोकपूरें॥ भावनां
सोंश्रीस्वामिनीजीरूपश्रीआचार्यजीहें॥ तिनकोख

रूपविचारिदेजोतकरियहविनतीकरे॥ करिवेवारेआप
हो॥ मोपरकृपाकरिकेंसगरिवस्तुअंगीकारकरिये
निर्विघ्नयहमनोरथसाधहोइ॥ पहिलेदिनधनमं
जहोइ॥ सोसेनभोगमेंआरोगे॥ सोरादिनसांमिग्रीप्र
सादीभंडारमेंरहें॥ परोसनांमेंनाहीआवे॥ पाछेंइस
रदिनमेंलाभंगारयजभोगतीनोंमेंधनमंजआरोगे
रात्रिकोंश्रीस्वामिनीजीकेमनोरथकीमंगलाश्रीयमुनाजी
कीभंडारमेंकुंमारिकिकें॥ राजभोगमेंसगरीश्रुतिरू
पामोषनाथीके॥ पाछेंपरोसनांमेंचारोवरकाएकठो
रनिऊसे॥ धनमंजकेसंग॥ वडा॥ तथासूरनकोसाकूधीमें
भूंज्यो॥ संधानांअरुही॥ १॥ रतालू॥ टेंटी॥ आवनी
बूंकरोहाडीनकीकूयेरी॥ अनसषजीमेंपहिलेदिनमें
दासेर॥ २॥ वेसनसेर॥ २॥ दोऊन्यारेन्यारेघीमेंभूंजि
वरावरितूरामेंडारिमगहवांधिये॥ मिस्वजारिये॥ लाडू
करिये॥ बेसनमुख्यमेराश्रुतिस्वा॥ धीश्रीयमुनाजी
बूराकुंमारिका॥ मिरबसीतकारविवाहमेंभोजहें॥ सो

पुंयो-
५५

प्रभुके भोजकी सांमिग्री श्री चंद्रावलीजी ॥ अपने धरतें क
रिकें ले आवत हैं ॥ दूसरे दिन बार सांमिग्री होइ ॥ वन में
३ ॥ मांठ ॥ धीके परत की रोटी ॥ पीरो भात ॥ पीरो भातान
त्यसिधां ॥ वन में ३ श्री स्वामिनीजी ॥ मांठ श्री यमुनाजी
रोटी श्री चंद्रावलीजी ॥ कुमारिका इत्यादिक के गावतों
दोप दिन सांमिग्री करिती ॥ सरे दिन कुंड वारो गोपी वध में
तथा राज भोग में ॥ पूरो में डल मलरा ॥ १६ ॥ को होइ ॥ तथा
वारह ॥ १२ ॥ को करे ॥ तथा आठ को ॥ ८ ॥ तथा चार को ॥ ४ ॥
पातें घटिन ही ॥ नीचे सीरा ऊपर मगरी ॥ ताके ऊपर से
वके लाइ ॥ सोमलरांन के कोने नयों ॥ ऊपर से सो
भक्त न के डालि लत आव कुंच हय हो ॥ मलरा श्री भग
रूप ॥ हर सी लगावत हैं मुख्य के भाव में सच मगन हैं ॥ तपो
सबने स्वामिनीजी प्रवेश करे ॥ तथा अंगीकार करे ॥ सख
जी में के मलरा ॥ १६ ॥ हूं होप ॥ वारह होइ ॥ आठ होइ ॥ चार
होइ ॥ चार होइ ॥ दोप में दही भात ॥ दोप में खीर सागी चो
षा की दही भात श्री चंद्रावलीजी ॥ पीर कुंमारिका ॥ तामें

पूरा श्री स्वामिनीजी ॥ श्री भक्त श्री यमुनाजी कवहें चा
ख सखी के चार अन्न सखजी कवहें चार सखजी के आठ
अन्न सखजी के ॥ कवहें आठ सखजी के आठ अन्न सख
जी के ॥ कवहें आठ सखजी के चार अन्न सखजी के
कवहें वारह सखजी के ॥ वारह अन्न सखजी के ॥ कवहें वा
रह सखजी के ॥ सोरह अन्न सखजी के ॥ कवहें सोरह सख
जी के ॥ यहरी तय सखजी ते अन्न सखजी वदे ॥ परंतु घटन
हो ॥ सखजी सहित होइ सो दो होरो क हवे ॥ अन्न के ले आ
न सखजी के एक हये क हवे ॥ अन्न भूट में कुंड वार के स
ख ॥ १०० ॥ होय ॥ ताको यह भाव ॥ संशर्ण वृज नंदरा
यजी वख जो नजी सगरे गोप गोपी को ग्वाल कीर्तनि पा
इध धरि पाकी पीठ्या पिकें देत हैं ॥ सो पातें श्री रां मांस
खान्ना दिय हव ज भक्त न कीलीला में सहाय कहें ॥ ता
ते वृज भक्त प्रसन्न हैं मांछें ते पीरे खोरे के उपर नां बांधि
अपनी प्रीत बांधत हैं ॥ पीठ्या पिकें यह पुष्टिर सको
एषां पन करत हैं ॥ पीछे मलरा अधरा मत्त को रस

में सरूप करत हैं। पापकार कुंजवारो श्रुतिरूपा करि प्र
भक्तों प्रसन्न करत हैं। सखी को तथा भक्तन सखी को।
सीतकाल में ५५ करत हैं चार चारों जूथ पतिके भावत
एक में सगरी स्वामिनी सखी जन भ्रोर अछि कबनि
भ्रावतो सुबेन करि ऐ। पाछे नित्य की फिरती सांभि
ग्री। मंगलामे पीत भात। लोंग भात। वेगन भात
गेहं कारोटी उरद की रोटी। नित्य मंगलामे गोर भ्रा
रों। सो सीतकाल में नांही। नित्य नडी सांभि ग्री भ्रा
रों। मागवार ५५ भ्रा रों। वन मंडा की चोरी सनमें
मंगला श्रंगार राज भोग फेरि दूसरे मंगलामे वडा
कचोरी सों। गोपी वल्लभ में सपडी में होइ सो के संह
ग भ्रंयो साक तथा गुड के कचोरा। सपडी में तरा पूरी
होइ सो सखी जन को भोजहे। गुड की होइ। डलहनी
की भ्रोर की पांड की होइ। डलहनी भ्रोर की चारै की
पीठी मुख्य के नाव सों पीरी तामें गुड मिलाइ जी तर
भारिके करे। तथा चना की चारै की पीठी के कोरे वजता

में गुड तथा भंजे साक यह धारिये वन मंडा पे वलवान
हं। तथा पुष्टि है। चोपूरे होत हैं। सो वज को भाव हे श्री स्वा
मिनी जी उरद वज रूप। माडा तथा धीता पोदाने रार
सो नक्तन को छे हरूप धरत हैं। पीर वडा इध में चोरी
गडारिये। घे सखी नां डी गावो करि चो के मेरा की लो
ड में धी के वडा की नां डी करि धी में तरिके। उपर पूरा
भुरकावे। चो पिलाकत हैं। दूसरी रीति पीर गाडी करि
पाछे सला पर पी सके वडा करि धी में तरि पूरा भुरका
वे। तथा माग पर रंच धी डारि में दन्ना च सों से कि पूरा
भुरकावे। सागी चांवर की सो निज भक्तन को भाव। चीला
वसन के तथा उरद की पीठी के संग धी राने रार धरनो
संजाव गेहं के कंकन की। ताकी पीर निज भक्तन के ना
व। मंसावजी के भरे। पहिले वजी के धी में तरिके पाछे पां
नी डारिके भ्रां चवे। पां नी डारि कपरा में धारिके पां नी सों
रि। पाछे मेरा की पूरी बलिके पीछे वजी भारिके कंगरों
हार धी में तरे। सो मुख्य भक्त के कंगरूप। गेहं की रोटी

निजभक्तनकेभावसों॥ उरदकीरोटी श्रीयमुनाजीकेभाव
सों॥ बाजरेकीरोटी सखीजनकेभावसोंहैं॥ बाजरेकीपीत
रीसखीजनकेभावसों॥ चांवरकीखचरीश्रुतस्सा॥ मि
हींचांवरकीकुंमारिका॥ मोटेचांवरकीसोंधीचांवरकापिच
री॥ रोटीकेसंगधीअरगुडधरनों॥ रोटीहसोभक्तन
केमंडलाकाहे॥ दोकलाउरदकेसोश्रीयमुनाजीकोभा
वहे॥ गंहकेविचडातामेंवनांकीसारहे॥ सोमुख्यभूगंह
श्रुतिस्सा॥ तामेधीभेहस्सइवीभूतश्रीयमुनाजीको
नकुमारिकामीनीविचडीमेवावूराजारतहें॥ चांवरकुमा
रिकामेवाश्रुतिस्सा॥ वूराश्रीस्वामिनीजी॥ जयश्रीय
मुनाजी॥ बेसनकेखंडराकरतहें॥ सोमुख्यश्रीस्वामि
नीजीकेहृदयस्स॥ तथाजडाकुंवाकीस्सगंहतेविचडा
उडामिलो॥ सोकुंमारिकाद्वरीभूतश्रीयमुनाजीके
भावतें॥ कुचोरीश्रीयमुनाजीकेकपोलस्स॥ आखे
उरदपांनीडारकेजवपांनीजरजायमृगकीनांरीतव
कडुबोतेलजारतहें॥ श्रीयमुनाजी॥ तथाएकदिनचांर

सोऊआषश्रुतिस्सानोयौवनवलवान॥ अनसखडीमें
सबकेलाइश्रुतिस्सा॥ तथावरवध्वोऊआरकेनेहैं॥
बसनकेमगदकेलडुआमुख्यस्वामिनीजीकुचस्स॥ अ
कलोबेसनधीमेंभूजितामेंवूरास्वामिरचजारएसीत
कारलडुवावांधिये॥ चोरीगकेमगदकेलडुआसुधकुं
मारिकाकेभावस्स॥ सागीचांवरलालरंगअनुरागस्स
इहरवडीनेरीभूममेंराजारतहें॥ पकोडीकरिकेपागत
हैं॥ श्रुतिस्साकोभाव॥ पयचीमेराकीपगीसोश्रीचंद्राव
लीजीकोभा॥ श्रुतिस्सामेंमुख्यहैं॥ उपरेगश्रीचंद्रावली
जीकोभावमुख्यस्स॥ पीरीफेंनीश्रीस्वामिनीजीको
मुख्यस्स॥ स्वतेफेंनीकुंमारिकाकोमुख्यस्स॥ नांजीसां
मिग्रीउडकेचूंनकीजलेवीकरे॥ तापरवूराभुरकावेत
थाचासनीमेंपागे॥ श्रीमुनाजीकेअधरस्सचंद्रकलामे
राकोपागोश्रुतिस्साकेमुष्स्स॥ मांषनवडाश्रीस्वामि
नीजीकोमुख्यस्स॥ इहीवडापागेसोश्रीचंद्रावलीजीको
मुख्यस्स॥ मनोहरलडुवाइध्वारिकेचोरीगकोचूंनडा

धंउ रिलडवाहोइ सोकुंमारिकाकोभाव मनोहरलाइमग
५८ डीकूरिकेंबांधो सखीजनकेकुचस्स कपूरनांजीश्री
स्वामिनीजीकेहृदयस्स लोगचारतनीस्सतपालो
ग। दंतसतनबहृत वाकरस्वतवृत्ताकेहें सोकुंमारिका
केकरकरारस्स घेकरअतिस्सफे उस्सकेचूनकीबूंश
धोसकेलडुवा तामेंमिश्रीकीकनीकरकरार सीतका
रश्रीयमुनाजीकेकुचस्स गंगामेंहूरिजारकेपागें सो
श्रीस्वामिनीजीकेमुखस्सकंगरादंतदर्सन तेसन
कीबूंतीकेलडुवा मुख्यस्वामिनीजीकेजावते चकुलि
तिलडारिकेंकरें सोश्रीयमुनाजीअपारीकुंमारिका
जावते खनमंडापाहिलेदिनकरेंहें सगरेहजकोजा
ववोपूंरोहे हृदयकमलस्स वृत्ताश्रीस्वामिनीजी
कोरससगरीसांमिश्रीमहें तातेश्रीजीअंगीकार
करतहें लोनमानसमयकोअधरामतहें तातेम
भुकोबहुतप्रियहें धनुरमांसमेंसगेसंवंधीकोभो
जनकरावतहें आहपीछेंभोजहोतहें पाछिलीरा

तिमेंहोइतरमंगलामेंकुंमारिकाकेजावतेआरोगे
अंगारमेंगोपीवधनमेंश्रीस्वामिनीजीकेजावते राज
भोगमेंअतिस्सफाकेजावते श्रीयमुनाजीसबमेंहेंत
थारा अजभोगमेंसगरीस्वामिनीसखीकेजावसों गवा
लमेंश्रीचंद्रावलीजीकेजावसों भोगनोमरमनकोहे
तातेआरागिकेभोगनोमधरेहें सषडीकेसंग
क्योंआरागतहें सषडीश्रीस्वामिनीजीकेजावतेहें
श्रीस्वामिनीजीपीछेंसबकोसुगमसुवकारीरसको
पानहोइअनसषडीश्रीचंद्रावलीजीबलवांनहें सोअ
सहितविहारहें कोरेवडातामेंलो नडाकेसीतकाल
मेंधरतहें संगगुडधरतहें भोजरावरहें श्रीयमुना
जीस्सतिनकेसंगसाकधरतहें ३ तथा ४ कोमंड
लकुंमारिकास्स मांषनामिश्रीमुखकोअधरामत
हहीबंधोश्रीचंद्रावलीजीकोअधरामत ओरोइ
धकुंमारिकाकोअधरामत वीरीमुखकोचर्वितवीडा
अतिस्सफाकोचर्वित नईसांमिश्रीहोइतादिनलुचरी

धनु
५२

लड्डाप्रकाश चार ज्योतिर्गोत्र

नाही॥ लुबडी सषी जनको हृदय रूप है॥ सषी की कचरि
यां सवतरह की तरिकें धरत है॥ ऊपर को छिल का हरि नां
ही करत है॥ सुत सिध फल रूप है॥ प्रथम धाम के वरह
रूप में सूप गड़ी॥ पाछे तेल तथा धी ल्ये हं रूप पाप के प्रभु
के जोग जोग भडी॥ कर करार सो सीत कार है॥ मेवा मिगरी
लेंडु वा वसन की सेव श्रीय मुना जी के नावते॥ को सी लोन
की वसन की सेव मान समय के अधर्य मुव्य के नावते पी
त फेनी मुख्य के नाव॥ विहार मेल की सीत कार समय
परत है॥ या प्रकार मग सर के महीना में का ल्यानी देरी
को अर्चन श्री चंद्रावली जी रूप॥ पूस मग काली को अ
र्चन॥ सो श्री जमुना जी का कालीनां मोह भोगो कल्या
न करता है॥ तथा कल्यांतर में एसे हं है॥ पूस सा देरी
को चीर चोर कंद व पर विराजे॥ सो थोरो सो मु मारिका को
नाव फूलो रस के पाइ चें अर्थ॥ संशर्ण रास पंचाध्यासी में
फूलो रस पाइ के॥ कर व को व स न कहें॥ तथा कां म रूप
है॥ कुं मारिका को नग्न प्रभु देख के सर्वांग अलौकि

क कर दीरे॥ पाछे कुं मारिका के पुरु सार्थ पुं नाव आय हृद
य में रहे॥ शत नां डायली ने हंते॥ सो वस्त्र में ल पोटे अलौकि
क द्रव्य वस्त्र करि दीरे॥ न भीजे॥ न मेलें होइ॥ जल विहार
जोग्यता में पह जता ऐ॥ आपुन श्री गोवर्द्धन को नित्य देवत
हें॥ जय प्रभु पा करि के देषे॥ तब अलौकिक देह होइ जा
त व स गे पंचे रस लि जांइ॥ पाछे आधिदैविक
अलौकिक रात्र श्री चंद्रावली जी डारार सक्ती डा श्री व
सन श्री यमुना जी गर राजद्रुम लता कुं ज स व कुं मारि
का को दिष्टा रे॥ पाछे कहे मेरो गुं नगोन सेवा करि के द्रु
होइ॥ पर पक्ष सरद में तुम्हारे मनोर्थ पूर्ण करेंगे॥ तब कुं
मारिका को आसा नइ॥ या प्रकार मंगला ते से न पर्यंत
रात्र दिन र मन लीला को नाव विचारें॥ अवया समय श्री
आचार्य जी की लपाते॥ या नां व सो र मन है॥ तथा वरस
दिन के सव ड सवन मे र मन को प्रकार है सो विचारें॥ पू
सवाही॥ १॥ ते नित्य सिधाने कुं ड वारो क स्यो॥ श्रुति रू
पा में कि तने क न क को नों मग सर में प्रभु सो होत है॥ सो

प्रपित्त भयो है ताते न गाने को कुंडवारी करत है ॥ ता
ते श्रीवधन कुल के इहां प्रस्ताव में कुंडवारी करत है ॥ म
लरा १६ ॥ चतुर विधि भक्त में एक एक के चार चार ह
र दी खोरंगत है ॥ कोने न पर चार कुं मकुं मके एक काल गा
वत है ॥ हर दी को साधिया हं क हं करत है ॥ मलरा १४ ॥
दही भात के श्रुति स्था के भावते ॥ मलरा चार मुख्य
स्वामिनी के भावते ॥ मलरा १८ ॥ अन सष डी के नी
चे सी रा ऊपर मर डी ऊपर कोने सोऊं चे से व के लेई मल
रा के कोने कुं मकुं मल गाए है ॥ चतुष्टय भयो है ॥ श्री
के अनुराग में भरे है ॥ हर दी लगावत है सो विरह करि
के भक्त न के भ्रंग पीरे न पहे ॥ कोरी हर दी को साधिया
प्रभू भ्रागे करि रे ॥ ता पर भोग धारि रे ॥ पाछे वी डी वा
र धारि रे ॥ चारों के भावते ॥ ऊपर नां न के खे ज रे ग के
गवाल न बुंदे त है ॥ लीला में सहायक गवाल है ॥ म
हा प्रसार योग्य है ॥ ताते एक एक मलरा देत है ॥ क
हं गाल हं गालिनी को स्थ धरत है ॥ वृज भक्त न को

संकेत सिध करनार्थ श्री जी के इहां पात्र चोक में मांज
त है ॥ लीला गोप्य करनार्थ पात्र सुध ड ज रे करत है ॥ ता
ते मलरा ड पर नां चोक में देत है ॥ चोक में हं अन के प्रकार
की लीला है ॥ सष डी के श्रुति स्था के मंडल ॥ अन सष
डी में कुं मारिका मुख्य स्वामिनी के मंडल श्री यमुना जी तो
सम है ॥ सष डी अन सष डी के रोऊ करे तो रोहरो कहा
के ॥ नीचे सी रा ऊपर मर डी ता के ऊपर से व को लाई आ की
ने के ऊपर लो ॥ सिंधा सन भ्रागे हर दी को चोक मंडल का
खे ॥ ता पर भोग धरे ॥ स्वस्व भुज भु मि ता पर भक्त न के मंड
ल या प्रकार ॥ माह सु ॥ ५ ॥ वसंत पंचमी के क्षीत काल
की सांमि ग्री होई ॥ कोरी भक्त को मनोरं पर हि गयो होइ तो
वसंत में होरी में डोल के पहिले होइ पीछे नां शी कुंडवारी
जव वने त वही करे मार्ग सर में कुं मारिका का करे ॥ प्रथम
के कल सुद्ध दास भाव है ॥ पति पुत्र न ही है ॥ पति हता वत
पूख में श्रुति स्था के ॥ गाथ नार्थ है ॥ पर कि पारस की
लीला करन वारी ॥ ताही ते श्री गुसां डी जी श्रुति स्था के

धनु
६१

मुखिया पूस में प्रगट भये ॥ **मार्ग सरसुदि ॥ ७ ॥** श्रीगोसु
लनां पजी को जन्म दिन ॥ पाडकाजी को अन्नग राज
भोग न्याये पारी की आरती पात्र कर सा तो बाल रुके
जन्म ~~दिन~~ उत्सव सा तो मंदिर में वैष्णव के धर हो
॥ **ई** तथा और बाल रुकी पाडका जहां हो र सो उन के
जन्म दिन को अन्नग न्याये राज भोग ॥ पारी की आ
रती ॥ **सुख वरि ॥ ८ ॥** श्रीगुसांड़ी जी को जन्म ॥ श्रीगुसां
ड़ी जी के प्रगटे पीछे श्रुति स्था के नाव सो सेवा हो
सार वा द्रो ॥ तामें पुष्टि मार्ग में श्रीगुरुजी को
नाम अष्ट मंदिर आदि में कृष्ण नाम नहीं ॥ तसे ही
श्रीवध्वन कुल में सात संस्य में कृत कृष्ण नाम
नाही धरे ॥ सो याते पह पुष्टि मार्ग में भक्त पुष्टि
प्रभु अकेले एक दिन नहीं रहत ॥ ताते लीला
सहित नाम हे ॥ बाल कृष्ण नवनीत प्रिय कहें ॥ ताह
में नाव यह हे बाल जो ब्रजवाला भक्त सहित कृष्ण
वनीत प्रिय स्वामिनी जी को अधरामत जिनको प्रि

यहे ताते लीला साहित नाम में कृष्ण आणे ॥ हृदय में न
कृष्ण नाम को रन करत हे ॥ ऊपर सो नेह सो पुकार
तहे ॥ सेवा ग्रह कार्य करत गुरुजन नंद्य सो रा बाल कृष्ण
नवनीत प्रिया जी कहिलाल कहि पुकारत हे ॥ माता पिता
को पुत्र को नाम लेना उचित नाही हे ॥ न कुरा मोदर गरि
धर वसी धर मुरली धर मदन मोहन ब्रजनां पगो कु
लनां पुरादि कलीला के नाव सो पुकारत हे ॥ वित्त में
अष्ट प्रहर कृष्ण नाम को रन करत हे ॥ मंत्र रूप ताते पु
ष्टि मार्ग में कृष्ण नाम श्रीकृष्ण नाम दोऊ के नाव ते म
त्र गोप्य हे ॥ ते से ही श्रीगुरुजी मन में राधानां भक्त
रन करत हे ॥ ऊपर श्री कहि के पुकारत हे ॥ परम बध्न
हे ॥ ताते इहां वध्वन नाम श्री आचार्य जी को हे ॥ ताते
श्रीकृष्ण कहिये ॥ तब जुगल स्व रूप को नाम भयो ॥ ते से
इहां श्रीवध्वन कहिये श्रीगुरुजी के वध्वन प्राणा प्रि
पया हैं ॥ मे जुगल स्व रूप सगरी ब्रज की स्वामिनी सगर ब्र
ज की लीला रूप नाम हे ॥ ताते प्रभु महावन गोकुल में

प्रगटे श्रीस्वामिनीजी रावल में प्रगटी ॥ तिनके बीचों
बीचगाइ पीवेकी पोषारहे ॥ ताहांते दोऊकी सीम जाय
मिलीहें ॥ तहांचंद्रनांनरि गेराते रावल में अन्नपने स्त्री
परकर सहित वरनांनको वरसाने ते संग वष भानका
सुसरारहे ॥ सो रावल भोजनको आये ॥ तथा के सीरां
नवको भपवरसाने में तयो ॥ तव वष भानकी रतजी
रावल में रहे ॥ चंद्रनांन परकर सहित पोषर परकाची
जगेवना पकरेहे ॥ तहां पोखर पर श्रीस्वामिनीजी से वि
यवर सपहिले प्रगटीहें ॥ ताही ते उहां नंद गोवर सां
ने के बीच रिगेरा गावहे ॥ जव श्रीचंद्रावली जी प्रगटी
तव भयामि टिगयो ॥ वरनांन जी वरनांन मे गये ॥ चंद्र
नांन परकर सहित वेटी को ले करि गेरा गावहे ॥ पाछे की
रतजी को गर्भ रह्यो ॥ तव अन्नपने पीहर आइरी रावल में
तहां वेटी नदी प्रस्ताव में आइरी हुंती ॥ या प्रकार श्री
चंद्रावली जी को जन्म जुगल स्वरूप की सेवा अ
र्थ प्रभु को अन्नपंग ॥ पाडुका जी को नारा राजभोग

प्रथम पाडुका जी को तिलक आती ॥ पीछे प्रभु को कहंसे
गही प्रभु के तिलक आरती होतहे ॥ नांभी के हिन प्रगटे
हैं ताको भाव यहहे ॥ २ ॥ को अन्नक सवसां नडो है ॥ श्री
गुरजी और श्रीस्वामिनीजी अन्नमी को प्रगटी ॥ श्री
जोमी को श्रीगुसांजी जी प्रगट होइ यह जताए ॥ श्रीगुसां
जी के हृदय में रोऊ स्वस्व रहे ॥ जैसे नो के नीतर आव
होइ श्रीमद्वैद्यजी चरनारविंद साधन न कि स्पर्शहे ॥ ति
नो हर्षन कर ॥ फल रूप श्रीमुख ताही को भाव वि
चार नो ॥ तै भोग धरतहे तिलक करतहे श्रीमुख की भा
वना ते वागा पाग न पहिरें ॥ उच्चकाल में आदनी सीत
काल में राजाजी ॥ सो पाते प्रासिध र्सन चरन कोहे ता
तै बहां मुख्य जग वत स्वरूप विराजत होइ ॥ तहां श्रीपा
डुका जी पलंग पर विराजे ॥ जहां मुख्य पाडुका जी होइ
तहां सिंगासन पर विराजे ॥ पोटे पलंग पर सो पाते ॥ ज
हां प्रासिध प्रभु विराजे सवको हर्षन देइ ॥ तहां केवल
स्वामिनी रूप होइ सिंया पर विराजतहे ॥ तहां पाडुका

गुलां जीमुख्यहें तहां सिंगासनपरवेरि केल्ल्यस्वहोइर
६३ सनदेतहें रात्रिकेस्वामिनीरूपहोइसिज्याऊपरपोढत
हें श्रीगुलांजीउदीपनभाव श्रीभ्राचार्यजीआलें
वनभाव ॥ अंगकोपहभावहें केसरिमुख्यकेअंग
वरन ॥ कपूरचंदनश्रीचंद्रवलीजीकोअंग ॥ ओरसुगं
धआंवलाओखल श्रीयमुनाजी ॥ हररीकीबुंक
नीकुंमारिकेअंगरूप ॥ तुलसीकीबुकी नीमुख्य
के श्रीअंगकोगंध ॥ तथाहररीमंगलद्रव्यहेंव्याहोइ
नाहोइ ॥ तवहेंहररीलगावतहें ॥ तेलफुलेलसगरीखां
मिनीकोव्येहस्व ॥ तत्रजलहेसोभक्तविरहकाकिंत
तहें ॥ तातेअमजलहोतहें ॥ तातेअमजलहोतहें ॥ तिन
मेंसीतलजलमिलावतहें ॥ सोश्रीयमुनाजीकावि
योगनाहीहें ॥ तातेवेसीतलहें ॥ पाछेअंगवस्त्रभक्त
अपनेअंचलसोपोछिकेसुखकरतहें ॥ पाछेश्रीगु
लांजीकेउत्सवतेगढेस्वरूपउत्सवतांशिकेसरीतनि
यापहरतहें ॥ सोभक्तनकेनिजअंगवर्ण ॥ पाछेस्वधन

लालहरीकिनारीभक्तनकेवाहरूप ॥ पाटकीकुंलही
वागाकेसरीरंग ॥ वागाकेभीतररुइकोवागाश्रीस्वां
मिनीजीकोअंगरूप गुदगुदोकेसरीश्रीअंगवर्ण ॥
किनारीश्रीयमुनाजीभक्तकोपाइप्रनपूल ॥ तहेंरु
इकेवागाते ॥ वागामेंसंजाफश्रुतिस्वा ॥ मगजीकुंसां
रिका ॥ वागामेंचाकहें ॥ सोभक्तनकीसाजीकोखेजहें
राऊओरभक्तलपटिरहेहें ॥ पडका लालअनुरागसो
प्रभुवेधिरहेहें ॥ भक्तनकीनीवीकीजररूपपडकाके
अंचलहें ॥ सोनीवीकोरुवाहें वेत्रश्रीचंद्रवलीजी
केभावते ॥ पशिकातातेदछिनरहें ॥ मर्यादापुष्टि
नुकेवलपुष्टिस्वामिनीजीस्वमर्यादारंचनराखें
पूलकीमालीलातिमडीसगरेभक्तनकेभावसो ॥ स
वगेरजसकेल्योराजभोगपीछेवडीहोइपासरहें ॥
काहेतेश्रीस्वामिनीजीकोविहारहोइतवनेकुंइर
हें ॥ उत्सवकेदिनअनोसरनएपाछेवडीहोइ ॥ मा
लाहेसोकुंजलताइमवेलीवनसबकोसुगंधनानां

गुसां ॥ प्रकाशकी स्वांमिनी के अंग को सौर नक्षत्र सी हि
 ६४ वावत है ॥ सो श्री स्वांमिनी जी के अंग में तथानपम
 अपन पको दोष के अत्यंत प्रसन्न होत है ॥ पाछे नार
 सी हरप सो लगवत है ॥ ललिता जी को भाव ॥ एसी प्र
 क संनता पूर्व होऊ स्व रूप ललिता जी ॥ अपन हृदय में
 एषत है ॥ वंदन वातोरन वा जिन प हउ तस्य को अंग है
 भक्ति न के हृदय को नाव उधर लि त होइ वाहर फे लो है
 राज नोग में सेव दशा दिके बडा ॥ तीन सु डा ॥ श्री गोसा
 क ॥ पचारों के नाव सिधिरन बडी श्री पादु जी धोडी
 दाय मंग की सिधरन भात रही भात ॥ पाप ड ॥ कभी वा
 सोंदी ॥ तर में वा ॥ स्स्के में वा विलसत ॥ त नांमि
 जले वी श्री चंद्रावली जी के अंधर रूप श्री गोसां
 ५१ जी श्री गोकुल हुते ॥ इहां अष्टमी को श्री गोवरें धरने
 राम रास सो कुं न रास सो क ह्यो सवे रे श्री गुसां डी जी
 को जन्म दिन है ॥ सो जन्माष्टमी की नां डी मानो जल ले वी
 धरो ॥ तब सगे सेवक मिलि करे रात्र को जले वी करी ॥ स

वरें राज नोग आयो ॥ इतने डी श्री गुसां डी जी श्री गोकुल
 तप धारे राज नोग सरावे तब जले वी देवी ॥ तब एव है ॥ त
 वसेवक नने कही प्रभु आपु मनो रथ करि के कराए है ॥ ता
 ते अजह सेवक लोग श्री जी के ह्यां सांमिनी को देत है ॥ वं
 ही सकट पारा ॥ वं ही के लडवा ॥ सेव के लडवा ॥ मेवाती ॥ त
 धा ॥ सीरा ॥ सांवन ॥ मिश्री पादुका जी के न्याये इ
 त नो ही नोग ॥ कोरी हर दी को चोक पूरिता पर ओं द्रोइ
 ध ॥ कटोरा गुड स्वता तिल यह धरिये ॥ मोती की आ
 रती चूं न दी वडा धरि तिल क करि पाहिले पाडुका
 जी को पीछे प्रभु को ॥ धी हे सो एं ह है ॥ वाती वरत है ॥
 सो नकन के हृदय को विरह रूप ही वाहे रूप ॥ प्रभु
 परारत है ॥ थारी हृदय रूप ॥ मोती आभर खन कुं मकुं
 मन्त्र नुराग सां धिया मंगल हज रूप ॥ चूं न के आच
 ही वलानकन के मंडल रूप ॥ आधिक ला करि अष्ट
 विधि अष्ट पर्ये देही दीप्य मान है ॥ अष्टा सिद्ध वारत है ॥
 वीच में ही वलाहे सो मुख्य स्वांमिनी के नावतें ॥ मुनि

गुसां- याचारचारेजुषपातेअपनपोवारतहे॥ श्रीचंद्रावली
 मकर- जीस्सेकीआरतीकरतहे॥ कुंमारिकासेनेकीआरती
 ६५ करतहे॥ नोष्णवरहोतहे॥ श्रीगुसांजीप्रगरेपीछेनि
 कुंजलीलाकंदराकेनीतरकीसिसरतिपर्वतभाहोंसु
 ही॥ ११॥ हांनलीलातेसरह॥ १॥ प्रबोधनीतेहेंसंत॥ २॥ श्री
 गुसांजीकेउत्सवतोंसासिरसोमाहसुदि॥ ४॥ तांसीदि
 न॥ ४०॥ नीतरलीला॥ पाछेंदिन॥ ४०॥ पेलकेनाहली
 लाभीतरलीलाहें॥ ताहीतेवीचमेंउत्सवकोहीनाही
 हसुदि॥ ५॥ तेंवसंतसितुवैसापसुदि॥ ३॥ तेंभीषमदि
 तुअसाठसुदि॥ ६॥ तेंवरवारितु॥ पागमारपुदि॥ १॥ नीला
 मेंहें॥ होयहोयमहीनाकोल्लमनाही॥ प्रभुअंगीकार
 करेंतवारितुहोइ॥ मकरसंक्रांतकेपहिलेदिनागीक
 हिए॥ प्रभुनीतरनिकुंजमेंभोगकरतहे॥ तातेश्रुतिरू
 पारिषिस्थापर्वमांनतहे॥ वेश्रुतिहें॥ वरिषिहें॥ तातेअ
 भंगराजभोगमेंवैसनकेचीलामुख्यकोआरुंमा
 रिकाकोमिल्योनाव॥ उरदक्षीणीकीचीला॥ श्रुतिरू

पाश्रीयमुनाजीकोमिल्योनाव॥ सेवधाछिकेवडा॥ तीन
 बूडा॥ भीगेसाक॥ इसेरदिनसचरेहोइतोअंगारमेंसां
 ऊकोहोइतोसेनभोगमेंविचरीतिलवासंकलें॥ प्रभुसे
 नमोविचरीतिलवाआरोगें॥ तथाविचरीराजभोगमें
 होइ॥ तिलवासंनभोगकेसंगआरोगें॥ राजभोगमें
 पाहेहोइ॥ जहांतांसीतिलवानाहीआरोगें॥ तहांतांसीभ
 ररहिपे॥ श्रुतिरूपाविषिस्थापर्वसंतकरतहे॥ माह
 ३॥ ४॥ कोसवसाजजरीको॥ विपारोधरे॥ उरीपनभा
 व॥ ५०॥ दिनपेलनोहोइगो॥ यहभक्तनकोजताऐसाव
 धोनरहियोरजभोगमेंकंधूसांमिग्री॥ निकुंजमेंविहा
 रकरिअवसरंगरेतजमेंकरेंगे॥ तातेजरीरूपहृदयको
 नाववाहरुलरुलातहे॥ अथवावसंतहोरीकीभावनां
 श्रीहरिराजजीकृतलिखते॥ अथवावसंतपंचमीकेदि
 नकांमकोजनमनयोहे॥ तातेवसंतरितुआरकांमदे
 वआपुसमेंपरमामित्रहें॥ जहांकांमदेवप्रथममोहिने
 कोजातहे॥ तहांप्रथमवसंतरितुकोप्रकासकरतहे॥ ता

तातेदशदिनताइससंतहीभावतहे

गुप्तं- तातेवसंतपंचमीतेवेलझराकांमकोप्रगट्ठो॥ तातेलोरीमें
६६ सवकांमत्तताहोतहे॥ तहांवसंतकेषेलप्रथमदिन॥ १॥
कोषेलमहीनां॥ १॥ ताकोआजिप्राययहहेजो॥ वसंतदिन
॥ १०॥ मेउदीपनलीलाहे॥ औरमहीना॥ १॥ आलेवनक्की
जहे॥ तथावसंतकेदिनरसमेंदसप्रकारकेभावहे॥ त
थावसंतकेहेसोकांमकोपूजनकरतहे॥ वहतकांम
लोकविखेहंअध्यात्मकांमकोमहादेवजरारसीरे॥
आदिदेवकांमस्तनगवांनआवहे॥ साक्षात्मनसप
केमन्मथेतितातेदसदसदिनचारोअतकांमनो
स्पहे॥ दिन॥ ४०॥ तातेवसंतकेदिनरससातिकांम
पतातेफागुनरदि॥ १॥ तांरीदिनरसपसीके॥ पा
छेदिनरसतामसीकेफागुनसुदि॥ ५॥ तांरीमाख्हि
नरिसनिर्गुन॥ तातेसवतेनारीषेलजाकेमुनकहेन
जासी॥ जंजरोपनोसोकंदर्पकोआरोपन॥ सोआ
गंकहेगेफागुनवही॥ १॥ तेउतरेदिन॥ १५॥ तांरीम
सक॥ १॥ नेत्र॥ २॥ अधर॥ ३॥ कपोल॥ ४॥ कंठ॥ ५॥ क

स॥ ६॥ युगम॥ ७॥ उर॥ ८॥ नात्रि॥ ९॥ कटि॥ १०॥ गुह्य॥
११॥ जंघ॥ १२॥ घोंह॥ १३॥ चरन॥ १४॥ पदांगु॥ १५॥
यात्रातिउतरेऔरफागुनसुदि॥ १॥ तेवहेपहणुष॥ १॥
चरन॥ २॥ घोंह॥ ३॥ जंघा॥ ४॥ गुह्य॥ ५॥ कटि॥ ६॥
नात्रि॥ ७॥ उर॥ ८॥ युगम॥ ९॥ कक्ष॥ १०॥ कंठ॥ ११॥ क
पोल॥ १२॥ अधर॥ १३॥ नेत्र॥ १४॥ मस्तक॥ १५॥
याप्रकारअलौकिकभावालम्कहेलौकिकबुधिस
र्वधानराषनीआलेवनक्कीजहे॥ तातेमहीनां॥ १॥ मंघ
मारगफाहे॥ औरदुपहरकेसमयपासकेसरगुला
सअवीरइतनोरीपासरहे॥ बोचानाही॥ ताकोभाव
यहहे॥ जहांतांरीक्कीजभलाधीहती॥ सेयापास
क्कीजभगवरीधीन॥ तातेचोवाक्कीवस्वसवस्वतया
ते॥ जोमुख्यनिर्गुनकीकर्ताहे॥ पाछेअलौकिकगु
नसंयुक्तकेमनोरथतेनएदिनरसवसंतकारीमें
वनावेधरतहे॥ सोपरबोधनीतेअकुरतहे॥ भक्तन
एसीतकालमेंअनेकमनोरथकरतअववसंतमेंपु

वसंत रितु
लौकिक सांमिग्री सों काम को पूजन करत है ॥ सो वसंत
रितु भक्त है ॥ काम रूप प्रभ को पूजन करत है ॥ तामें सां
मिग्री कहत है ॥ बिलाखे की ॥ उलाल पांच प्रकार को ला
ल स्वत पीरोह सो सांमिग्री स्वांमिनी जी के श्री अंग
वर्ण श्री स्वांमिनी जी के श्री मुख चंद्र ते प्रगट है ॥ ताते श्री
चंद्रावली जी नाम है ॥ ताते स्वत श्री गुलाल को सां
मिनी जी के हास्य कहत है ॥ यह भाव है ॥ हसो सम सां
पीजन को श्री गुरु जी श्री स्वांमिनी जी में ॥ तामें
ऊके वर्ण है रूप है ॥ सांमिग्री मली जी प्रसवीन मे
रतु भगवद लखें की प्रभू के पक्षर्पती है श्री स्वांमिनी जी
का का की वेदी है परम चतुरली ला संवंध मे है ॥ भावा श्री
यमुना जी के अंग वर्ण है ॥ जिन के प्रभाव ते खेल में वि
रोधता नांही होइ ॥ परम सनेह परस्पर बडे ॥ नां प्रका
र की कंचन की रतन जटित छोटी वडी बिचकारी है ॥ सो
री मां नों काम को वांन प्रगट भयो है ॥ ताते जिन को के स

स्कोरंग है ॥ ताको श्री स्वांमिनी जी के हृदय को निर्मल प्रे
म है ॥ सो जिन को भिजावत है ॥ सो प्रेम मस्त होइ परस्पर
खेलत है ॥ कुंम कुंम है सो काम को अंकुर है ॥ जामें गु
लाल भर के मारत है ॥ तिन को काम रूप सनेह ॥ श्री ग
कुरु जी में बहत है ॥ ओर रोटी है सो होरी में मुष मां डत है ॥
या हृदय के रिक्त ॥ ताते स्वांमिनी की सखी विसाधार
प है ॥ ओर हरी ह पी सिकें लगावत है ॥ सो ऊयाह संव
ध न है ॥ सो मां मां सखी रूप है ॥ ओर ते लपुले ल श्री स्वां
मिनी जी के सनेह सचि न है ॥ ओर जोगेंद पुलन की
सो अपने अपने जूय में है ॥ सो परम चतुर है जहां
जात है तहां खेल की परस्पर आनंद रूप लराड़ी करावत
है ॥ ओर नवलासी है ॥ सो परम को मल सकुं मारिता की
अवध है सो उबेल में आड़ी है ॥ ओर पुलन की ध्वरी डें
ग है ॥ सो परमानिकट श्री गुरु जी वज्र भक्त न के जूय प
क गोर होत है ॥ तब तिन को काम परत है ॥ परस्पर मां मां
स्कारि के धूम मचावत है ॥ ओर हज न कन के हाथ में वां

सहं हैं सो वडे वडे जो धा गो पहे सो हाथ में जेरी सीचे
 गटे हैं सो रंग पचकारी गेर छरी तें चक ना ही डरप
 त ॥ तिन को वां सले के तिन के मर को न जाइ दे तहे ॥ पात्र
 कर होरी में जीत नी सां मि ग्री है ॥ सो सर बना वरूप ही है ॥
 परम अलौकिक पदार्थ है ॥ अवतार ने क बाजे को ना वक
 हत है ॥ १ ॥ बीने श्री स्वां मिनी जी के संयोग सम में कुंज में
 मुरली श्री स्वां मिनी जी वियोग सम में ॥ चंभूत कुंज ली
 अतिरूपा वियोग सम में ॥ ४ ॥ जल तरंग अतिरूपा वियोग
 सम में ॥ ५ ॥ मदन भेर अतिरूपा राजस ॥ ६ ॥ धांसा अति
 रूपा तां मसी ॥ ७ ॥ इंदु नी अतिरूपा सात्विक ॥ ८ ॥ पान
 सां नकुं मारिका सात्विकी ॥ ९ ॥ नग एकुं मारिका राज
 सी ॥ १० ॥ संघ कुं मारिका तां मसी ॥ ११ ॥ धांय कुं मारिका
 सात्विकी तां मसी ॥ १२ ॥ मुख चंग कुं मारिका सात्विकी
 ॥ १३ ॥ अंग मार सात्विक राजसी ॥ १४ ॥ कंजरी कुं मारिका
 सात्विक तां मस राजसी ॥ १५ ॥ धुट्की कुं मारिका राज
 स सात्विक ॥ १६ ॥ ताल कुं मारिका राजस तां मस ॥ १७ ॥

कृता लकुं मारिका राजस ॥ १८ ॥ मजीरा कुं मारिका तां
 मस सात्विक ॥ १९ ॥ महं वस्त्र कुं मारिका राजस तां मस ॥ कुं
 मारिका में तां मस तां मस ना ही है ॥ २० ॥ घारी अतिरूपा
 सात्विक राजस ॥ २१ ॥ जालरि अतिरूपा सात्विक सात्विक
 ॥ २२ ॥ दोल अतिरूपा सात्विक तां मस ॥ २३ ॥ ढक अतिरूपा
 सात्विक ॥ २४ ॥ डिमा डिमी अतिरूपा राजस सात्विक
 ॥ २५ ॥ मोमि अतिरूपा राजस ॥ २६ ॥ गिरि गिरि अतिरूपा
 सात्विक ॥ २७ ॥ पत्ता मस सात्विक ॥ २८ ॥ पत्ता मस सात्विक
 जस ॥ २९ ॥ वाव अतिरूपा तां मस राजस सात्विक ॥ ३० ॥ मंदंग ललि
 तारा सम में ॥ ३१ ॥ सह नारी श्री यमुना जी मधुरे सुर ॥ ३२ ॥
 छुर मंडली विसावां जी सुर हे तहे ॥ ३३ ॥ दुधारा ल्यां मिला
 जी सखी ॥ ३४ ॥ सारंगी चंपक लता सखी ॥ ३५ ॥ करना
 ल जो मंजी ॥ ३६ ॥ तुरही को मासवी ॥ ३७ ॥ किन्नरी स
 ह चरी आदिया प्रकार अने क बाजे लीला संबंधी है हो
 री सर्व वस्तु नाचात्मक है ॥ महारस रूप अलौकिक जो

वस- कोऊ सरखी नंदरायजी के वसंत को साज कर आचतहे ॥
 ६९ कोऊ सरखी हव भान जी की रत जी के हां जांतहे ॥ तहां की
 रत जी पास जाइ लालिता विसाखा आदि अत्पत मधु
 खचन सों कहतहे ॥ हे की रत जी आज वसंत को दिन प्र
 थम बेल कोहे ॥ अपने अपने घर तेहे मतु म्हा रे पास
 विनाती करन आहीहे ॥ ताते अपने वी की हे मारे स
 गदेह तो हम सबी न में परस्पर होरी बेलें ॥ तब की राजी
 वह तन सन होइ श्री स्वामिनी जी को अंग गंधा मकरा
 य ॥ तन नौ तन वसन आभसन पहिराय पाछे नां
 प्रकार के जोवन साविन संग कराय ॥ आसी करार
 लन को साज गुलाब अवीर के सर सेरंग आदि अ
 कासी आरिस ॥ वसों कही पाछे लालिता अ
 साविन सों कही जो होखियो मेरी बेटी परम कुं मार अ
 त्यंत जोरीहे ॥ बेल में कहूं अकेली मति छटांडियो ॥ त
 वसखी न कह्यो जो की रत जू पहतुं म्हा री बेटी हे सोह
 म को प्रांन प्रियहे ॥ ताते तुं मरच कहूं बेटी की चिंता म

तिक रोहम अपने प्रांन की नाही आखी भोति राखेगी ॥ या
 प्रकार की रत जी को नली भोति सखी मां ध्यान करतहे ॥ पा
 छे श्री स्वामिनी जी को लेवली ॥ सो वसंत को साज सिध
 करिके श्री नंदराय जी के घर को समाज सहित चलीहे ॥
 एक कुं चन को कल सजामें जल कुं च रूप ॥ ता पर खजूर की
 माला होस्त रूपता में बोर सों आभन रूप ॥ ता पर सर
 सों के फूल धुधार विंद सै रस में फूलें ॥ और फूल आ
 रित या आरि जत रूप ॥ और ऊपर लाल पखवेष्टित सा
 रस ॥ और ऊपर गुलाब अवीर छिरे के हे ऊपर पीरो
 वस्त्र अपने अंचल सों कुं च रूप बांधेहे ॥ केवल प्रभु के
 अंगीकार करि वे योग्यहे ॥ यह वसंत की सामि ग्री
 प्रभु को दिषाही अपने हेर को अत्रि माय जनों ए
 पा प्रकार गोपी जन श्री स्वामिनी जी को आगे पधराय
 नंदराय जी के घर को चलीहे ॥ इहां रोहनी जी पहि
 लेही जानत हती जो आजु गोपी वसंत बिलाइ वे को
 आचेंगी ॥ ताते रात्र में डरि राज भोग को सामि ग्री स

वसं. ७०. धिकरिराषीहती॥ पाछे प्रातकाल श्रीयसोदाजी श्री
गकुरजीकोंवहतविधिसोजगाए॥ हेवत्सहे लालभो
रमैयोहे॥ चिरैयां वोली॥ गाखहृष्टसखातुम्हारोमा
रगरेषतहे॥ सुंदरवदनकमलमोंकोरिषावोनानां प्र
कारकीमंगलाकौसांमि श्रीसिधकरिराषीहे॥ एसे
अनेकजतनकीए॥ परंतु श्रीगकुरजी जागेनाही॥ त
वजसोदाजीनेकही आजवसंतपंचमीहे॥ गोपीवसं
तषेलनकोंआवेगी॥ तातेहे पुत्रस्नानअंगारकरो
तनों सुनतही श्रीगकुरजी चोंकिपरे सोअकेवेवे
हेमैयागोपीकववसंतषेलिवेकेआवेगी॥ तब श्री
यसोदाजी आयगोदमेउठा यहदृश्यसोंगायमुख
चुवनकरिसुंदरसिंहासनपरपधरायमंगलागाआ
गंरावें॥ पाछे स्नानकीत्यारीकरी॥ ताहीसमय श्री
स्वामिनीजीसमस्तज्ञभक्तनकें जूथसाहितआवा
भरीं॥ तब श्रीयसोदाजी श्रीरोहनीजी अत्यंतआनं
दसोंपरमप्रीतसोंसवनकोंअपनें घरमेंपधराये

पाछे श्रीस्वामिनीजीने श्रीहस्तसों श्रीगकुरजीकोंअ
भंगकरिकें स्नानकरायपाछे कोंमलवस्त्रसों श्रीअ
गन्नगोष्ठी नानां प्रकारकेअंगारपस्वतवागाकूल
हपागचुनीकेआभूषणपहिरे॥ पाप्रकारअंगारकरिषा
छेअंगारमेंगोपीवधनअपनें मनोरूपकीसांमिग्री
आरोगे॥ पाछे तत्कालही राजभोगरोहिनीजीसिध
करिकें लारीतब श्रीयसोदाजीरोहनीजीपरवहतप्रसं
नमरी॥ कसोतुम्हारोसनेहमैरेकांहपरवोहतहे॥ मे
जांनतमें पाछे श्रीनंदरायजी श्रीगकुरजीकों श्रीव
देवजीकोंगोरीमेंलेनानां प्रकारकेमनुहांकरिजिमा
वातहे॥ ओरनंदअपनेंदआदिकगोपसबश्रीनंदरायजी
केसंगवेगिकेंसंगभोजनकरतहे॥ पाप्रकारभोजनक
रिहापधोइवीराआरोगावतहे॥ पाछे श्रीयसोदाजी
श्रीस्वामिनीजी श्रीगकुरजीसगरेज्ञभक्तभीतरभोज
नपरमजावसंयुक्तकरिजलअचवापवीरादेतहे॥ आ
रतीकरतहे॥ पाछे श्रीनंदरायजीकेवेडेआंगनयतन

वसं-
७२

त्वचितहे ॥ तहां श्रीगुरजी श्रीस्वामिनी जी श्रीनंदरायजी
श्रीयसोराजी गोपी ग्वालसवधारेहे ॥ तहां श्रीयसोराजी
अपने पुत्रको गोदमें लिऐहे ॥ श्रीस्वामीजी अपने संगकी
आष्टिसखी आदिवसंतको साजले श्रीगुरजीको धिला
वतहे ॥ तब श्रीयसोराजीके आगे स्वरंचवागामो धिला पकुं
मकुं मको तिलककी पोहे ॥ पागपर रचगुला लखिरकी क
छू पोरो सो श्रीयसोराजी परा छिरकेहे ॥ तब श्रीयसोरा
जीने कही आज प्रथम बेल सवगोपी ग्वाल मेरे नाम म
षलो ॥ तब स्वामी मिलिके सहित नंदरायजी आदि नानंद
अनेक गोपगोपी श्रीवलदेवजीके आगे करिषे लन
लागे ॥ श्रीयसोराजी एक ओर सवगोपी श्रीस्वामिनी
जीके आगे ८ मुषिया करिषे लन लागी ॥ श्रीयसोरा
जी सवते वाचिके न्यारी गढी भरी ॥ एक छायी सीकनि
कपिचकारी रंगसों भरिके श्रीगुरजीके हाथ में दोहे ॥ स
खीनको निकट बुलायके श्रीगुरजी सो छिरकांरी ॥ त
ब श्रीगुरजी कहे मै यामें सवगोपी नकुं छिरक वं कुं जा

ऊं ॥ तब श्रीयसोराजीने वरजे ॥ कही पुत्रजी स्वोह तहे ॥ पाजां
तिसमकायके राषे ॥ पाछे श्रीनंदरायजी श्रीवलदेवजी
सवगोपगोपी आष्टी भांति सो वसंत बेले ॥ तब लालिताजी
ने श्रीस्वामिनीजी सो पछी जोतु मफो न्यारी गढी हो ॥ व
संत बेले ॥ तब श्रीस्वामिनीजीने लालिताजी सो क
हा ॥ मै तो तब ही वसंत बेलेंगी ॥ तब ये नंदरायजीके पु
त्र यसोराजीको गोद में हे ॥ सोषे लेंगे ॥ तिनके संग बेलें
गी ॥ हजमें चलेंगी ॥ तब ही वसंत होरीको सुख हो उगो
तब लालिता विसाया दोऊ श्रीयसोराजीके निकट आय
हाथ जोरि के विनती करि जो आज वसंतको प्रथम दिन
बेलको आरंभ हे ॥ ताते जसोराजी प्रथमतुं मफो छिर
क्यो चाहतहे ॥ काहे ते तुं मने एसो पुत्र जापो जो पहतु
म्हारो पुत्र सबके प्राण प्रिय हे ॥ ओर परमकुं मारहे ॥ अ
पंत सुखो भोरो हे ॥ कछुल छन चतुराशी नाही जान
तहे ॥ सोमें आष्टी भांति जानत हो ॥ ताते तुं म अपने पु
त्रको सोको देहु ॥ तब तुं मफो छिरके ॥ काहे ते तुं मारो पुत्र ऊं

वसं- परबहुतरंगनपरेगो॥ आष्टीइनकोसीतनवंगेगी॥ यह
७२ सुनिके श्रीयसोराजीबहुतप्रसन्ननशीकहीलललितातुमे
रेमनकीजानतहे॥ औरमेंजानतहोतुमेरेपुत्रको॥ आष्टी
भातिराषतहे॥ तवश्रीयसोराजीनेलललिताजीकीगो
हमेंश्रीगुरुजीकोरीरे॥ तवलललिताइरलेकेगडीभ
री॥ पाखेसबसाखिनसहितश्रीस्वामिनीजीनेश्रीयसो
राजीको॥ आष्टीभातिछिरकेतवश्रीनेदरायजीबहुत
प्रसन्नहोइकेगोपीनकोमेवावागा॥ आभरननसव
हिराय॥ पाखेश्रीयसोराजीअत्यंतप्रसन्नहोइकेनाना
प्रकारकीमेवामिगडीनानाप्रकारकेवस्त्र॥ आभरन
नश्रीस्वामिनीजीकोसबसपीनसहोपाहिरांडीव
होश्रीब्रह्मजानजीकेगोपहते॥ सोश्रीनेदरायजीकाबहु
तभातिछिरके॥ इतमेंनेमेलललिताजीनेश्रीयसोराजी
सोबिनतीकरीजोआजवसंतपंचमीकापरमउत्सवका
दिनहे॥ तातेतुमअपनेपुत्रकोआग्यादेहतोहजमेंवस
तपिलावे॥ औरतुम्हारेपुत्रकोरुचहृअमनहोइगोपसी

भातिराषेग॥ कहतेतुम्हारेपुत्रतेहमारीपरमसोनाहोतहे॥
तातेहमनुमसोबिनतीकरतहे॥ तवश्रीयसोराजीनेप्रसन्न
होइकेकहीहेलललितातुमोहकोपरमाप्रियहे॥ तातेतेरोव
चनदासोनाहीजातहे॥ औरयहमेंजानतहोमेरेकनहेया
कांतुमआष्टीभातिराषेगी॥ याभातिश्रीयसोराजीने
लललिताजीको॥ पाखेश्रीगुरुजीकोमुरवचुवनकार
केपूछे॥ अहोमेरेलालमेरेप्रांनकेजीवन॥ मेरेहरपेक
भक्षण॥ मेरेनेनकेतारेमेरेग्रहकेसीपक॥ अहोवत्सयह
लललितावसंतषलवेकोहजमेंकहतहे॥ तुम्हारोमनहो
इतोतुममेरेपासरहो॥ औरतुम्हारोमनहोइतोतुमल
लिताकेसंगवसंतषलवेकोजाऊ॥ तवश्रीगुरुजीक
हेमैयामेलललिताकेसंगवसंतषलवे॥ मोकोलललिताव
हुतआष्टीभातिराषतहे॥ यहश्रीगुरुजीकेवेनश्रीय
सोराजीसुनिश्रीवलदेवजीकोनिकबुलाइकेकहीजातु
ममेरेकनहेयाकेसंगजाहुगोपीवसंतषलवेकोहजमें
जातहे॥ तुममेरेकनहेयाकोलियेन्यारेगादेरहियोवडेव

सं.
७३

उगोपगोपीखेलेंगे॥ तहां नीर में मतिले जै पोत व श्रीव
लेदेवजीनें कही मेक नै या के संग जाऊंगो तुं मकखूचिंता
मातिक ये में आखी नांति राखेंगे॥ पाछें श्रीपसोराजी
अंतरंगी सखी बुलाय के में वामि गडी दे के कही उहां मेरो
पुन नखोइत व अरोगाइयो॥ ओर आखी नांति सो राखि
यो॥ तुम्हा स्वरों से में अपने कां न्ह को पगवति हो॥ पाछें
श्रीपसोराजीनें वडे वडे गोपन को बुलाइ के कही जो मेरो
क नै या हज मे वसंत खेलन जातेह॥ सो गोपी नचने बिनी
उन्मतेह॥ ओर क नै या मेरो परम सहु मारहे अपन व
चलहे क हं नीर में न जाइ॥ एसे राखियो॥ कोइ गोपी को नि
कर माति आवन दीजो॥ मेरे पुव कीर का जो॥ तेम गोप
न के संग बेलियो या प्रकार श्रीपसोराजीनें सखी सा कही
पाछें श्रीनंदरायजीनें अपने सख धारि गोप श्रीगुरुजी
के संग ही ऐर सा करनार्थ॥ या प्रकार गोप गोपी सखा श्री
गुरुजी श्रीवलदेवजी सहित श्रीगोकुल की गलीन में प
धारे॥ किलकारी सुनेही अपने अपने घर तेनें स्त्री पु
त

ख वसंत खेलन को निकसे॥ तव श्रीगुरुजी ललितानी की
गोद ते उतरि के श्रीवलदेवजी के पास आइ के कहे अरे नै या
हो मेरे नंदराय के ओर के सखा हो सो मेरी ओर आवो ओ
ख ख नांन पुरा की गोपी सो एक ओर होइ॥ तव वसंत वे
लिये॥ इत नों सुं न तही श्रीस्वामिनीजी अपन प्रसंन
साइ अपने सखी न के डुंड सहित श्रीगुरुजी के सन्मुख
घवाटी गइ॥ ओर उत मां हें श्रीगुरुजी श्रीवलदेवजी
समान सहित अपने जूथ में गढे नेए॥ तव श्रीगुरुजी
नें प्रथम के सरि की पिचकारी जरि के चलाइ॥ पाछें अवी
र गुलाल का पोटी चलाइ॥ पाछें श्रीवलदेवजीनें सखा
न सहित गुलाल उड़ायो॥ उत की ओर श्रीस्वामिनीजी
नें साखिन सहित गुलाल अवीर उड़ायो॥ सो गगन में मांने
अरुन स्वत पीरे स्यां मवार रखाइ रहेहें॥ ऐसो गुलाल
उड़ायो सूर्योदय गयो॥ तव श्रीगुरुजी अपने हस्त की छे
टी पिचकारी श्रीपसोराजीनें दईहुती सो घरि के श्रीरामां
कें हस्त में वजी पिचकारी हबती सो ले के उर गोपिन के डुंड

मोपेगिए ॥ सोकाहूँ केहारतोरें ॥ काहूँ कीचोलीफारी ॥ का
हूँ कीभुजाभूरी ॥ काहूँ कोकपोलचुवनकीऐ ॥ काहूँ केक
पोलनमंगुलाललगायो ॥ काहूँ केअंचलडलेटकीऐफा
रें ॥ काहूँ केसारखेसोभ्रिजारी ॥ काहूँ कोअतलिंगनरे
काहूँ कोअधरामतपानकराए ॥ अपनेजूथमेंफेरिआ
रगडेनए ॥ गोपननेवहतर्जनकीऐ ॥ परंतुकाहूँ केहाथन
आए ॥ अत्यंतचंचल ॥ श्रीवलदेवीकेपासआरगडेनए ॥
तवश्रीवलदेवीनेएख्यो ॥ जोतुमकहांगयेहुते ॥ तवहो
श्रीसमापासमेरीपिचकारीहुती ॥ सोलेनगयोहुता ॥ पह
सुनिकें श्रीवलदेवीचुपहोइरहे ॥ अरेगोपीचरनकीचा
तुरी ॥ सुनिकें मुसिक्याइनी ॥ तवश्रीस्वामिनीजीनेकही
देखोललितापहनंदेकोवेयाअत्यंतचंचलहे ॥ अपनेनादा
वयहलेगयोहे ॥ अबरेसोजतनविचैरोजोश्रीगुरुजी
कूं श्रीवलदेवीकूं दोऊनकूं संगमैपकरिलाइये ॥ यहसु
निकें गोपीसगरीकोपी ॥ इहां श्रीगुरुजीनेश्रीवलदेवी
सोकह्योहेदोऊनीअवसावधानरहियो ॥ हमपरंतुमपर

गोपीकोपीहें ॥ कहेंपकरेंगीतोअनेकनाचनचावेंगी ॥ तव
श्रीवलदेवीनेकह्योमेसावधानहें ॥ तुमअपनेकोसा
वधानरहियो ॥ इहां श्रीस्वामिनीजीकीएकसखीसुव
लकोजेखवनी ॥ सुवलसखीहोइश्रीवलदेवीकेकां
नमेंकह्यो ॥ जोतुम्हारेऊपरसखीआवतेहें ॥ सोतुमश्री
हमकेनरखेंमातिरहियो ॥ यहतोवजोखलीहें ॥ तुमको
पकरायफंथोपुजाजिजाइगो ॥ तातेतुममेरेसंगचलो
तोमेतुमकांवचाऊंगी ॥ तवश्रीवलदेवीकहे ॥ हेनैयास
वलतुं सोकावंचाइकस्यतोवजोखलीहे ॥ मोकोपकरा
ऊंआपुतोजाजिजाइगो ॥ तातेतुमोकोअपनेसाथले
चलि ॥ वरुनीमेंमंतकैश्रीवलदेवीयाप्रकारसाधिने
अपनेजूथमेंलेजाइकेपकरे ॥ इहां श्रीगुरुजीश्रीवल
देवीकोदूँहनलागे ॥ इतनेललितापरमचतुरहैंअसं
तचंचलहें ॥ सोपीखेंतेआखें श्रीगुरुजीकोपकरिकें
अपनेजूथमेंलेगई ॥ सषासवहरिजाजिगये ॥ तवश्रीस्वा
मिनीजीनेश्रीगुरुजीकोमुखरोरीहरदीगुलालसोमां

जो केसर के बेंदासीरे सरवांग पर सकीए ॥ एक सखी ने श्री
बलदेवजी को मुषमांजो ॥ केसर के रंग सो छिरके ॥ पाछे
श्री चंद्रावली जी ने श्री स्वामिनी जी सो फल्यो जो न्नाजु को
पहिलो दिन हे ॥ मथ मषेल को हे ॥ तोत बहुत छिरके ॥ म
ति जो कहें श्री पसोराजी सुनेंगी तो काल्हि ते बेल न को
न पठावेगी ॥ यह सुनिके श्री स्वामिनी जी श्री चंद्रावली
जी पेव होत प्रसन भरी ॥ पाछे श्री मुखमांजो हो सो अप
ने चंचल त सां पोव्यो ॥ एक कुं म कुं म को तिल न कीरे
बख बागे छिरके हे ते इसरे पहिराये ॥ जे सो मथ मपहि
रह ते ते सो भ्रंगा करि ॥ श्री स्वामिनी जी किं मनोर्थ को सां
मि ग्री ॥ सो श्री गुरुजी को भ्रोगा री ॥ तो ही नाचते व
संत पंचमी के उत्सव को भोग आवे ॥ पाछे सिंग सनरी
बिलावे ॥ यह भाव हे ॥ इतने री में ललिता जी आइ के प
रुआर श्री गुरुजी को वाम भ्रार श्री स्वामिनी जी को गो
द में डग यली पे ॥ पाछे सवन सो फही जो अब बहुत वेर
भरी हे ॥ श्री पसोराजी भिजेगी ॥ सवेर फेरि बेल न आ

वेंगी ॥ ऐसे कहि श्री पसोराजी के पास को परम प्रेम कहें हो
लेहो लें चलत हे ॥ और श्री गुरुजी श्री स्वामिनी जी पर
स्पर मंद मंद मुसिकात हे ॥ केड़ी सखी आगे निरत रुत
जात हे ॥ आस पास सखी नाना प्रकार की गौरी ऊंचे सुर सो
रत जात हे ॥ होऊ भ्रार के वाजा ताल मंद गमा कि उप सह
नोरी घोल दिदिंकी ॥ वासुरी मुख चंगन फेरी ॥ उपादि क
वाजत हे ॥ परम भ्रानंद के रस में सगरे हज के लोग छके हे ॥
यामकार श्री नंदराय जी के घर पधारत हे ॥ सो के सी उपमां
भरी ॥ मांनो एक नौतन को रांन को टिंरामिनी ने
व सो हे ॥ सो कुलाहल सुनिके श्री पसोराजी परम भ्रा
नंद पायके ॥ और सी उतारि राडी लोन वारि भ्रने क न्यो
छावर भ्रा भ्र वन वस्त्र भ्रने क जाच कि अन को देत हे ॥
पाछे श्री गुरुजी को भ्रार श्री स्वामिनी जी को गोद में
ले मंदिर में पधराये ॥ सुंदर सिंगासन ॥ संध पर श्री ग
ुरुजी श्री स्वामिनी जी को पधरा परोऊ न को नाना प्रकार
की सांमि ग्री प्रेम पूर्वक भ्रोगाए ॥ तब ता ही समय ल

बसं- लिताजीनेश्रीयसोराजीसो ~~हो~~ क ह्यो जोहेजसोधा
७६ जीतुम्हारेपुत्रकोमेंबहुतआखीभातिराषतहो॥ देबास
वसकेवसभीजेहे॥ तुम्हारेपुत्रकेसरखेहे॥ तबश्रीयसो
राजीप्रसन्नहोइकेबोलीजो॥ हेलालिताजीमेतुम्हारे
भरोसेअपनेपुत्रकोपगवतिलोमेंजानतहोजोतुम्हारा
कहुवापरबहुतछोहहे॥ तबश्रीवलदेवजीवालेहेजसोरा
जीतुम्हारेपुत्रकोतोमेंआखेरख्योहो॥ ललीतादिक
गापीजोमोहकोअर। श्रीकृष्णकोहंपकरिलेगरी॥ व
हताखिरकेअरमुषमांडनोहे॥ अरअनेमभातिपीके
दीषोटीगारीसीनीहे॥ तातेपहललीतारुखीहेतुम्हा
रेआगेवातवनांवतिहे॥ जबश्रीयसोराजीनेललीता
जीसोकही॥ तमेरेकनैयाकोवहोतसुखमेंकरापो
हे॥ मेतुमकोअपनीजानिकेपुत्रकोतुम्हारेभरोसेपग
याहे॥ अबमेअपनेपुत्रकोकवहुनपगंऊगीमेरोसकु
मारिभोरोवालकहे॥ तबलालिताजीश्रीगकुरजीकीआ
राखिकेसंनहीमेंकह्योत्रोअवतुमहमकोसांचीकरो॥

नाहीतोवसेमैवहोरिकालूतेकेसेषेलनवनेंगे॥ तबश्री
गकुरजीकहेमैयाराकृतोरुगेहे॥ राऊजीसोअरगोपि
नसोषेलमेपरस्परगगरोनयोहो॥ तातेलालिताकोहो
परुबेरीदेतहे॥ इतनेमेंमधुमंगलबोल्होजोहेश्रीय
सोराजीतुमश्रीवलदेवजीकेवचनकोभलोविसवास
कीयो॥ इनकोअपनेसरीखीसुधिरहतनाहीहे॥ श्री
लालिताजीश्रीगकुरजीकोतुम्हारेआगेगादीमेंलीये
आसीहे॥ इतनेमेंअरसपीगोपकहेजोजसोराजी
लालितादिगोपिनसोतातेहारेपुत्रकोबहुतसनेहहेता
तेलालितासांचीहे॥ तबश्रीयसोराजीलालिताजीपर
बहुतप्रसन्नभरी॥ पाछेमेंवामिगारीवस्तुआभूषनना
नाप्रकारकेगोपिनगोपसहितपहिरापविदाकीएआ
रवोहोतविनतीकाएजोअन्यजागहमायेहेजोतुमस
गरीगापीमेरेधरआवातहो॥ मेरेकठिनवचनकोकुरो
मतिमानियो॥ मेतुम्हारीसबकीआग्यांकारनहोंका
लहेकरिइनगलीकेवनकोआइयो॥ करतरांनीहख

भानराजा सोहमारो पाइ लागत कहियो ॥ तव श्रीस्वामिनी
 जी श्रीपसोराजी के पायलागडगी ॥ श्रीजसोराजी असीस
 रीएजोन्नचलतुम्हारो सुहागहोह ॥ पाप्रकार श्रीस्वामिनी
 जी साविन सहित अपने धारयधारी ॥ जहां की रत जी घर
 पर आइ ॥ आखी करि ॥ घर में पधराइ नाना प्रकार की
 सामि श्री अरोगाइ के सेनफराय ॥ इहां श्री बलदेवजी श्री
 गुरुजी सो कहै जो तुम मोको श्रीपसोराजी के आगे
 पूजे कीये ॥ मंतुम्हारो संग न चले गो ॥ अब कहूं पतिन
 कूं ॥ तव श्रीगुरुजी श्रीबलदेवजी संचले जो राऊजी तु
 मतो सरांसी सांचे हो ॥ परंतु तुम धरि हाता तो हे हो ॥ ना
 कही सो चिंताना ही ॥ परिवाहिर सो अंगीता को सना
 नकस्यो ही चाहिये ॥ मोको तो तुम ही नखें पित होह
 मंतुम तो सरांसी एक ही है ॥ यह सुनि के श्रीबलदेवजी
 मासिकाइ के चुप होइ रहे ॥ पाछे श्रीपसोराजी सखी
 नको गोपनको भोजन कराप विदा कीये ॥ अष्टसखी आ
 दि अंतरंगी पास रहे ॥ पाछे सुंदर से जया बिछाइ के श्रीग

गुरुजी को गोरु में लेवेगी ॥ तब अंतरंगी सखानको बहुत भांति
 सनमान करि विदा करि के कहै ॥ कालि सवारें फेर आइ
 यो ॥ पाछे श्रीपसोराजी श्रीगुरुजी को मुष चुंबन करि अ
 नेक प्रकार सो लालन करि रखे ॥ हे पुत्र तुम्हारो मन गाय
 चरावन को है ॥ केहोरी बेल के कहै ॥ तव श्रीगुरुजी बाल
 भाव सो श्रीपसोराजी के ग्रीव में लटक के कहै मै पामें व
 सां होरी बेल गो ॥ गाय चरावन इन वसंत होरी के दिन न में
 न जाइ गो ॥ तव श्रीपसोराजी श्रीगुरुजी को मुष चुंबि
 के लो लो कहै ॥ गाइ होरी तां शिं ओर कोरी चरावे
 गा ॥ तुम लालिता संग होरी बालियो ॥ तव श्रीगुरुजी को
 ले मै याजवगापी जनक सत होरी बालि चुकत है ॥ तव मो
 पे फगुवा मांगत है ॥ सो मेरे पास तो कहूँ नही ॥ विन
 को मोको बहजा बिछावत है ॥ जो नंद जसोदारा जारा
 नी कहारत है ॥ परंतु बडे रूपन है ॥ एक पुत्र बडे नागिन तें
 पायो है ॥ ताइ को कछु देख नही ॥ या प्रकार तुम को ओर
 बाबा को गारी दैत है ॥ ओर मोको बहुत पिजावत है ॥ तव

श्रीपसोराजीअपनेअंगेनंजारकीहुंचीलेश्रीरांमाके
बुलाइकुंचीहाथमेंदेकेकहीजो॥होरीवसंतलोजोमेरे
कहैयाकष्टकहे॥सोमेरेविनाएखेआभरणवस्त्रमे
वामिगडीजोचाहेसोलेजैयो॥तवश्रीगुरुजीआरश्री
छमांश्रीयसोराजीपरवहुतप्रसनभए॥पाछेश्रीरांमा
अपनेंघरआए॥श्रीगुरुजीसपनकिएपाछेरात्रको
हुंजुनमेवसंतहोरीकोषेलहे॥यहमनमेअनुनवफर
नोजोगहे॥तोतप्रकासनाहिकियोहे॥**जकेयेन**
कहतहे॥पाछेफेरप्रातकालभए॥तवसगरीसरवीव
षभानपुराकीइकगोरीहोइके॥श्रीकारतरांनकिमहल
मंजाइ॥श्रीस्वामिनीजीकिनकटगइ॥तवश्रीकारतरां
नीसाधिनसहितामालिकेअपनीवेटीकोअपनकरा
य॥नानांप्रकारकेसुंदरासंगारकराय॥नानांप्रकारकी
सामिश्रीसाधिनसहितआरोगाडी॥पाछेपरमआ
नंदसोसाधिनकेसंगविदाकरी॥तवश्रीस्वामिनीजीस
खिनसहितश्रीनंदरापजीकेघरआइ॥तवश्रीपसो

राजीमंगलाभोगआरोगाड॥आरतीकीऐ॥पाछेसषी
जीश्रीस्वामिनीजीमालिकेभस्मानकराय॥अपनीरु
चिकेश्रंगारवनायो॥पाछेराजभोगआरोगायश्रीय
सोराजीनेआरतीकस्कि॥बेलकोसाजधवसाधिनको
सोपिकेकहीजोमेरोपुत्रअत्यंतकुमारहेवालकहे॥क
होइलचतराडीनाहीहे॥तोतपाकीबहुजहीसावधा
नीकरियो॥मलालितानेश्रीयसोराजीसोकहीजोतुंम
अपनेपुत्रकीचितांमतिकरो॥मंआछीजातिरावोगी
तवश्रीयसोराजीप्रसनहोइकेविदाकीऐ॥जवश्रीग
गुरुजीव्रममेआइकेकहेजोआजुमाहसुदी॥**६॥**हेसो
छहोरीतुवसंतसंयुक्तश्रीवृंदावनषलेगे॥तवसगरे
श्रीवृंदावनमेंपधारे॥तहांनानांप्रकारकेफूलपूखे
हे॥भंवरगुंजारकरतहे॥गिराज्रमेतेअनेकरुनांफ
रतहे॥तहांसदांशिवसंतरितुहे॥तहांवसंतरितुकहाव
तिहे॥जाकीमहिमाहंसासिवइंद्रधारिकेनाहीपावत
हे॥तहांश्रीगुरुजीपधारिकेयहमनोरथकीयोजोआ

जुदाहुपांऊंतोअरुनगुलालगतगोपिनकेमुषमेलेपो
तो॥श्रीराधाहै॥तिनकेमुषारविंदमेंलगाऊंअरश्री
स्वामिनीजीनेउहांअपनेमनोरथकियोजोमेंअजरा
वपांऊंतोश्रीगकुरजीकेमुषारविंदमेंपीरोगुलालल
गाऊं॥पांजांतिदोऊमनोरथकरिपाछेमिलिकेपरस्य
रवसंतषेलनलागे॥इतनेहीमेंश्रीरेवतीजीजूषस
हितपधारी॥तहांयहसंदेहहोइजोइनकोव्याहतोकर
कासीलामेंभयोहै॥यहांतुजमेंकेसेहैं॥तहांसमाधा
नकरतहैं॥जोयहांतुजमेंसगरोआधिदैविकपदार्थ
हैं॥इहांकीछटातेसगरेत्रिलोकीमपदार्थभयोहै॥श्री
गकुरजीअंतरध्यानलीलाकरे॥पांछेवनाभकारि
करकेनक्तनफालेकेंआयेहैं॥तवकालिंदीजीशिरसकें
आदिदैविकस्वस्वदेवस्वदेवहैं॥उधवकुसमोषर॥प
रप्रगरहोइश्रीनगवांनतेकहे॥सोतुजमेंआधिदैविक
उधवजीहैंहैं॥अध्यात्मवद्रकाश्रमगरे॥तेसेहीप्राधि
कृतिहजतक्तनश्रीगकुरजीकेनोगअरमरजादाश्र

तहजमेंश्रीवलदेवजीकेभक्ततातेश्रीरेवतीजीकास्वामें
हैं॥तिनकोआधिदैविकश्रीरेवतीजीअपनेजूषसहित
श्रीमदश्रुतिहजमेंहैं॥तिनसोविलपश्रीवलदेवजीसोवि
हारहैं॥अरतारादिकहैंआदिदैविकहैं॥निरसिंधासि
धपोतीपूषीरामचंद्रजीसवनकेरमाइवेमें॥वांनजी
सर्वदिलियो॥पांजांतिदोऊमनोरथकरिपाछेमिलिकेपरस्य
रकासीलामेंभयोहै॥यहांतुजमेंकेसेहैं॥तहांसमाधा
नकरतहैं॥जोयहांतुजमेंसगरोआधिदैविकपदार्थ
हैं॥इहांकीछटातेसगरेत्रिलोकीमपदार्थभयोहै॥श्री
गकुरजीअंतरध्यानलीलाकरे॥पांछेवनाभकारि
करकेनक्तनफालेकेंआयेहैं॥तवकालिंदीजीशिरसकें
आदिदैविकस्वस्वदेवस्वदेवहैं॥उधवकुसमोषर॥प
रप्रगरहोइश्रीनगवांनतेकहे॥सोतुजमेंआधिदैविक
उधवजीहैंहैं॥अध्यात्मवद्रकाश्रमगरे॥तेसेहीप्राधि
कृतिहजतक्तनश्रीगकुरजीकेनोगअरमरजादाश्र

वसं. पातु म्हारी हांसी मेने कहा करी हे ॥ जो मेरो विवाह भयो
 ८९ होतो तो मेह अपनी वहू के संग खेलतो ॥ तो मे अपने सज
 भक्त न के संग खेलंगो ॥ दऊ जी तुम भाभी के संग खेलो
 यामे हांसी काहे की ॥ यामे तो हमारी तिहारी परम सो जा
 हे ॥ यह सुनि के श्रीवलदेव जी श्रीकृष्ण भू भोरो जानि के
 हृदय सो लगाय लीयो ॥ तब सगरे गोप गोपी हंसे ॥ तब श्री
 रवती जी सकुच पाइ के न्यारी मढी नरी ॥ तब ललिता
 ने श्री रेवती जी के निकट जाइ के कहा जो वसंत होरी के
 दिन न मे पसीली लज्जा नाही चाहिये ॥ ताते न्याये प्रसन
 होइ के पुलिके वसंत होरी खेलो ॥ जो न्याये खेलत लाजला
 गे तो तुम हमारे संग मिलि के परम आनंद सो भव संत हो
 री खेलो ॥ तब श्री रेवती जी सारनि सहित लालिनी जी के स
 ग जूथ मे आइ के खेलन लागी ॥ तहां कोरी सखा सखा गोप
 न के हुंड मे आइ जात हे ॥ तिन को सखा गोप रंग सो छिर कि
 गुलाल लगाय नाना प्रकार के नाचन चायत वखोडत हे ॥ ओ
 र कोरी गोप सखा सखिन के हुंड मे आइ परे हे ॥ तिन को गो

प
 वी वखोडी नि के गुलाल लगाय सारी लेह गाहरा पने न
 मे अंजन दे के खोडत हे ॥ ताही समय मधुमंगल होरी
 बेलि समाज रोषि प्रेम मे डन मत होइ नांचत नांचत गो
 पिन के जूथ मे जाइ पयो ॥ तब सब गोपी प्रसन होइ के
 मधुमंगल को अंग जा गुलाल सो छिर कन लागी
 तब सखा सखा बोली यह मधुमंगल सखा वडो खेला हे या
 हि न्याय न हो पयो छिर कत हो ॥ इन मांषन चोरी ली
 ला मे श्री गुरु जी के संग हमारे घर न मे वहत विगार
 कायो हे ताते पाकी देह ते धी मां खन इत्यादिक ल
 गावो ॥ तब सब सखी हांसि के मधुमंगल के कपरा छी
 न धी मां खन देह सो पोतन लागी ॥ तब मधुमंगल स
 खाने श्री गुरु जी सो पुकार के कहि हे जैया श्रीकृष्ण
 तुम मो को छुडाइयो ॥ मो को गोपी धी लगावत हे ॥ तब
 प्रेम मे वूडि गयो कहि मो को धी पिवावत हे ॥ तब श्री ग
 रुर जी आदि सब हंसे ॥ तब श्री गुरु जी पुकार के कहि ॥
 जो न ले जैया कता को गोपी धी पिवावत हे तो आखी

वसं. मांतिषाड्योहमकोंएसोधीनचाहिये॥ तवमधुमंग
२२ लमनमेंविचास्योजोयेसवमेरीहांसीकरे॥ औरयेमों
कोंनाहिछुजावेंगे॥ तातेमेंहीकष्टअपनेंछरिबेको
उपाइकरूं॥ तवमधुमंगलबोल्पोसुनोंगापीजोतुंम
मोंकूंछोडोतोमेंश्रीकृष्णकोंतुम्हारेकुंडमेंलाइदेहं
इतनीसुनिकेंश्रीस्वामिनीजीनेहांसिकेंछोडिदीयो
औरमेवामिगरीषाड्येकोंदेकेंरुहीजोतुंमहांसनहो
जोसांचे॥ वचनबोलोगेतोतुंमकोंऔरबहोतकष्ट
इगे॥ अबजायकेकृष्णकोंवातनमेंलगाइकेपकराय
देहं॥ पाछेंमधुमंगलश्रीगकुरजीसआपसगरी
अपनीवातकहिकेंकह्योजोभैयाकृष्णगरीगोपीन
नेंतिहारेपकरिबेकोंविचारकीयोहे॥ सोतुंमधुमया
नरहियोमेतुंमकोंवचाइंगो॥ औरश्रीबलदेवजीकूंआ
गेंकरिकेंपकराइदेहं गो॥ तुंमकोंकांधेपटबढायकेले
जाजुंगो॥ याप्रकारमधुमंगलचतुराडीकरिश्रीकृ
ष्णकूंअपनेंकांधेपटबढायदोऊहाथनसोंपकरिदोर

करिगोपिनकेकुंडमेंजाइकेवेगगयो॥ तवसगरीगोपिन
दोरिकेंश्रीकृष्णकोंपकरिलीयो॥ तवश्रीगकुरजीनें
मधुमंगलसोंकह्यो॥ अरेनैयामोहिसोंछलकीयो॥
तवमधुमंगलनेंकह्योतुंममोंकोंछुजायानांही॥ उलटी
मेरीहांसीकरिकेंकह्योधीषाड्य॥ तातेमेंतुंमकोंपकरा
योसोतुंमहेंकोंमनमेंजावतहे॥ तातेमेंछलकीयोहे॥
पाछेंगोपीनेषारिऔरतेंघेरलीरे॥ आसपासतोस
वगोपीतिनकेमध्यमेंश्रीगकुरजीश्रीस्वामिनीजीवि
राजतरे॥ तवश्रीस्वामिनीजीअपनेंमनोर्थकोपीरोगु
लालअपनेंहस्तकमलसोंभावपूर्वकश्रीगकुर
जीकेमुषारविंदमेंलगायो॥ तवश्रीगकुरजीबहुतप्र
सनहोइ॥ अपनेमनमेंविचारेजोइनतोअपनोंमनें
र्थपूर्णकीयो॥ औरअवमेरोहूंमनोर्थसिधनयोचाहि
ये॥ तातेगुलालकीपोटरीगोपिनकेकुंडमेंचारोंऔरच
लारे॥ सोएसोगुलालकलायोजोसगरेगोपगोपीन्या
रेहूरगाढेनरे॥ औरअंधारोहेगयोकष्टसूजेनांही॥

वसं- तव श्रीगुरुजी अपने पीतांबर को ~~अपने~~ चला विछाप
८३ तापर गलवांही देके श्री ~~स्वामिनी~~ जी को वेगारे ॥ पा
छे अत्पत अरु नगुलाल हतो सो अपने हस्त क मल सो
श्री स्वामिनी जी के मुखार विंद में लगाय और गुलाल
उडाय अंधारो करि विहार आदि परस्पर अंधार म
त पां न हूं कीरे ॥ दोऊ स्वरूप परस्पर बहुत प्रसन्न प्रेम में
मगन भए ॥ ताही समय श्री स्वामिनी जी ने श्री श्री ग
गुरुजी के हृदय में अपनों प्रातिविंदे विमान को अंग
कार कीयो सो उठि के क्रोध सहित बोली जे तू मतो परम
रूप दी हो छल सो भरे हो हृदय में और जायका वेगारे
पीहे ॥ और ऊपर सो सनमान करत हो यह कहि अपने
मानि कुंज मंदिर में मान मंदिर हे ॥ तहा पदारी सा श्री
गुरुजी तो चक्र तहो इरहे ॥ नय करि के कष्ट वचन जु
वावानि कस्यो नाही ॥ विरह वस होइ के देह का दिखा
भूलि गये ॥ इतने में गुलाल की आधियारी मिटि ग
ई ॥ तव श्रीवलदेवजी सरबान सहित श्रीगुरुजी के

निकट आइ के कहें ॥ हे श्रीकृष्ण तो फों कहा जपो जो उर स
होइ के मंषर कि गयो हे ॥ तव श्रीगुरुजी के जो दाऊ
जी मो को गुलाल की पाटरी बेल में बहुत लागी हे ॥ ताते में
रामन अवही ठिकाने नाही हे ॥ अवही तु म मो सो बो लो
मति ॥ तव सरवासव आइ के कोऊ पांइ चांपन लागे ॥ को
ऊ हा पचापन लागे ॥ कहें नैया कृष्ण पाटरी लागी हे ॥
व आछे हे ॥ श्रीगुरुजी तो काह्यो बोले नाही ॥ इतने
में सुबल सषाने जान्यो जो यह सहज की पाटरी नाही हे सो
सुबल सषाने श्रीवलदेवजी सो और सव सखान सो क
ह्यो जो तु म सगरे ने क दूर गढे हो हतो में श्रीकृष्ण सो
पूछो जो कहा पाटरी लागी हे ॥ तुं मने चारों ओर ते घेरि
लिपो हे ॥ ताते यह परोडी धर राइ गयो हे ॥ तव श्रीवल
देवजी और सखी गरे सषा न्यारे गढे नरे ॥ तव सुबल स
खाने श्रीगुरुजी के कान में कह्यो जो ॥ अपने हृदय को
दुख मो सो कहो तो में जत न करो ॥ तव श्रीगुरुजी के
जो नैया सुबल तो सो कहा कहिये तू तो सब जानत ही हे ॥

सं-
२४

मेरे विना अथवा धवे मानिक रिक्के उमिगरी है। अथवा मे तो
ते कह कहें। मोपे तो उन विना रह्यो ना ही जात है। तब सु
बलने कहो तुम चिंता मत करो। मैं और लालिता दोऊ
मिल के अथवा ही लीवा पलावेंगे। तब सुबल सखा हो
सो सररी को नेष बनाय लालिता को संग ले दोऊ मिलि
के श्री स्वामिनी जी के निकट गये। तब सखी ने लालिता
सां कह ही तू इहां क्यों आई है। तब इन कह ली सररी ने
श्री गुरु जी पूछे रली पोहे। इहां तो मान की पोहे को
री सखी श्री कृष्ण को भुराइ के ले जा पगी। एक बार को
मान होइ तो समझें। इहां धरी धरी को मान होइ। कह
तां री समझाइये। तब लालिता ने कह्यो सररी स्वामिनी
मेरी परमाहित करनी सखी है। तां ते में इन सखी हों
एक बार विनती करी चाहिये। श्री गुरु जी श्री राधा जी
और कहा हूं सो बोलत नाहीं। सो मो को विनती करिके
पगरी है। यह सुनि के श्री स्वामिनी जी सो रह्यो न गयो।
तब अपने नेत्र कमल बालिके। श्री स्वामिनी जी ललि

ता की ओर मुँसिकां री। तब लालिता जी ने मन मे प्रसन्न जा नि
पास जाय अने क नांति सो सनमान की पोहे। जो मेरी प्रा
न प्यारी तू म विना श्री कृष्ण चंद्र कूं कष्ट सुहात ना ही है।
और तुम विन चले इहां अने क स्वामिनी ला गिर ही है। य
ह नली भरी मान न पो। हम अपने नी कुंज में पधराय ले जा
इसी तो तने क जतन कर श्री कृष्ण को अने क सो हदि
वाइसे तुम हो सो सखा री हों। एसे अने क चतुरा री के वच
न सोहि भुजा पकरि उगइ ले के अपने पेल के जूय में ले
आं री। तब सुबल सखा को नेष करि श्री गुरु जी सो कां
नेम कह्यो। जो मान छुड़ा पवेल में पधराय लायो हूं अ
व विरह क्यों करत हो। तब श्री गुरु जी ने वं उधारि दिसां दि
स देखें। सो जूय में श्री स्वामिनी जी को दोष के सुबल स
खा के ऊपर प्रसन्न होइ। अपने कंठ में गज मुक्ता की मा
ला हृती सो उतारि के सुबल को पाहरा री के र पर स्पर्ष
लम हो न लाग्यो। तब एक सखी श्री रां मां को स्वरूप ध
रिके। श्री बलदेव जी के निकट आइ के कह्यो जो हे राऊ जी

वसं. तुम्हारे रूप गोपी को पी बहुत है ताते तुम सावधान रहियो
 ८५ तव श्रीराज जी बोले हे श्रीरामा तुम को बचाइयो तव
 नरु ह्यो तुम मेरे संग चलो तो वचाऊं या प्रकार सपी हती
 सो श्रीवलदेव जी कूं वात न मेल गाइ राख्यो हे रेवती जी सो
 जाइ मिलारे पंचिके तव श्रीरेवती जी तो लाज पाइ के
 वेग गइ तव सगे गोपी गवाल हंसे सो श्रीवलदेव जी
 तो सकुच पाइ के नांजि आये तव गोपी जी तके बाजे वजाये
 वडो कुलाहल नयो सो श्रीयसोदा जी ने सुन्यो तव सखी
 रवी को मेवा मगरी सांमि गरी दे के कहि मेरे को नै या
 भूषो हो शो तु जाय के आरोगाइ आइ जो स
 तकोष लहोइ चुको हो शो श्री गुरु जी को पधराय ला
 य सो उह सपी सांमि गरी ले के चली सो श्रीगुरु जी को
 श्रीवलदेव जी को अत्यंत प्रेम सो आरोगाइ सो वह स
 री जोरी हती सो कह्यो मो को गोपी छिर के गीत नां
 हीं मे गोपी न के जूय मे जाऊं तव श्रीगुरु जी कहतु
 मखु खेन जाऊं तुम को गोपी नाहीं छिर के गी कहिते

तुम श्रीयसोदा जी के पास की हो ताते अनंद सो गोपि
 न के पास जाइ के मिलि आवो तव सखी गोपिन के जू
 य मे गइ तहां श्रीसांमि नीजी ने पूछी जो तुम कहा
 ते आइ हो तव सखी ने कही जो मे श्रीनंद राय जी के
 घर श्रीयसोदा जी के पास रहत हो सो श्रीयसोदा
 जी ने सांमि गरी पगरी ही सो श्रीगुरु जी के पास ले
 आइ हती यह सुनत ही सखी जनने पकर के छिर
 के तव उन विनती करी जो श्रीयसोदा जी मो पर को ध
 करेगी जो यह तक हा करि आइ है इतनी सुनत ही
 लावि ता विसाषा जी सब लह गा साटी चोली छिना
 इलीनी पाग पड कावा गा पुरुष को सख पवनां य
 के छिर की आछी नांति मुष मो डिगुला ललगा
 रे के कही जो अब जाऊ श्रीयसोदा जी सो मेरी पाला ग
 न कहियो तव सखी अत्यंत डर पति लाज साहित अ
 त्यंत ही न होइ श्रीगुरु जी सो कही जो तुम ने मोइ
 पगरी सो मेरी यह दिसा नरी अब मे श्रीगुरु जी

वसं. श्रीयसोदाजीकेनिकटकेसेजांडं मेरेऊपरसो धकरं
२६ गी॥ तबश्रीगुरुजीश्रीदामांसखासोंकहेजोनंजारतें
सारीलहंगाचोलीलेआवो॥ तबश्रीदामांलेकेंआवो
तबश्रीगुरुजीअपनेहस्तकमलसोंवागोपाकोपह
रावनलागें॥ तबवहसषीप्रेममेंविहूलहंगडी॥ सोरेह
दिसादहीनाही॥ तबश्रीगुरुजीलहंगासारीचोलीप
हिरार॥ बागापडकाउताएलीये॥ औरपागझारहन
सीरे॥ औरमुषमांडोएहनहीयोहे॥ औरकहीमेरा
ऊजीवसंतषेलकेंआवतहे॥ मैयाजीसोकहिहीजो
सोवहसषीप्रेममेंमगनहे॥ श्रीयसोदाजीपासआसी
तबश्रीयसोदाजीवासषीकीओरदेखवाहितहोइए
रहीजोकोनआसी॥ तबवासषीनेकहीमेरेपुत्र
कोसांमिग्रीआरोगायआसीहो॥ अबकोइधरीमें
संतकोबिलहोइचुकेगो॥ तबश्रीगुरुजीश्रीवलदेव
जीसाहितघरकोपधारेंगे॥ पहसुनिकेंमुसकाइकें
श्रीयसोदाजीनेकहीजोतूमेरेकनैयापासतोनाहीग

३॥ केतोतुअपनेपातिकेपासगडीहे॥ केतूकाहूओरगवाल
केपासगडीहे॥ सांमिग्रीहूअपनेगोपकोषचाइआसीहे॥
तबवहसषीचोलीजोश्रीयसोदाजीतुंममोंकोंगरीरे
तहो॥ सोजबश्रीगुरुजीश्रीवलदेवजीपधारेंतवपूछ
लिजियो॥ मेकवहूतुम्हारेआगेरूंचोलतिहो॥ और
तुंमेकहोतुंमेकहोइहें॥ तबश्रीयसोदाजीचोलीजोतु
सोहूइहोइहिगी॥ तेरेमुखसोगुलाललगयेहे॥ ओरको
इगोपकीपागमांघेपरपहिरीहे॥ सोतेरीचोरीप्रगट्क
वातिहे॥ तबसखीअपनेमांघेपरहाथधरेतोसांचीहेत
वतोअल्पंतलजाइपांइनपरिकेंकहीजोश्रीयसोदा
जीयेतुम्हारेपुत्रकेकांमहे॥ सोमोंकोसबकीनीमेरीला
जलीनी॥ तबश्रीयसोदाजीनेकहीजोमेरेकोइएसीस
षीनाहीहे॥ जोमेरेकनैयाकोसांमिग्रीअरोगायआ
वे॥ तबसगरींसखीसोरहजारमिलिकेंकहीजोश्रीय
सोदाजीउहांभीरबहुतहे॥ सोएकरोयसखीकोकांमना
ही॥ जोसगरींसखीनकोपगवातोउहांजाइइनकीसां

वस-
२७

गुरुजी

तकराप तुम्हारे पुत्र को लांमिनी आरोगा रक्षावे ॥ श्री
स्त्रीर में एकरोर की बात को न माने ॥ यह सुनि श्री पसो
राजी व होत प्रसन्न होइ छाक सिध करिके सखी नहा
पपगरी ॥ तव सखी सखी छव, ले श्री गुरुजी के सन मुख
आंरी ॥ सो जा सखी को जे सो मनोर्थ ह तो ॥ ता को ता ही
भांति मिले ॥ पाछे श्री गुरुजी गाल में डली करि वे
तव श्री ने मधुमंगल ते कह्यो है नै पाह मन्त्र के ले भोजन के
सेंके ॥ उहां सखी सगरी गोपी भूषी है ॥ उन हं को चला
इलावे ॥ तव मधुमंगल आनंद पाइ के गोपिन सो जा
कह्यो जो तुम सगरी वोग चलो श्री य सो राजी ने छाक
पन डी है ॥ सो तुम्हारे विना श्री गुरुजी न रोगत नां ही है
यह सुनिके गोपी नव होत आनंद पाइ के कह्यो श्री ग
गुरुजी हम सो रेली प्रीतरा खंत है ॥ तव श्री स्वांमिनी जी स
वसाधिन साहित पधारत है ॥ अपने जूथ सहित बराबर
मंडलाकार हज मध्य में श्री स्वांमिनी जी ॥ तिन पास अ
ष्ट सखी आदि अष्ट सखा और भू सर मंडल में

श्रीवलदेव जी और श्री रेवती जी उन के संग के सभी सखास
वहीं साहित अपनी अपनी फेंट में पि चकारी धारिके ॥ मति
को डीले जाय ॥ पा प्रकार सो पर म प्रीति सो भोजन कीयो ॥
आचमन करिके सवने वीरा आरोगे ॥ तव ललिता जी
ने कही जे अ व सांरु को समय भयो है ॥ ताते वोग चलो ॥
ना ही तो श्री य सो राजी बहुत धि जेगी ॥ तव दोऊ जूथ आ
नंद पाइ के पधारें ॥ तव श्री य सो राजी आरती करि नि
य की भांति सन भोग आरोगा रके पो दाएं ॥ पाछे ५ मा
ह ॥ के दिन के रिसखा हज नत श्री स्वांमिनी
जी श्री य सो राजी के घर पधारि ॥ श्री गुरुजी को पधि
राप के ॥ श्री य मुनां जी के तीर खेल को आरंभ कीयो ॥ तव
ललिता जी ने कह्यो जो यह नलो श्री य मुनां जी को धार
दे ॥ ताते इहां श्री गुरुजी श्रीवलदेव जी वृं पक स्या रहिए ॥
यह सुनिके श्री स्वांमिनी जी वा होत प्रसन्न होइ सन ही में
सव सखी न से कह्यो जो मारग सवरो को ॥ सो सखी ने ने जि
तने मारग हेते सवरो के ॥ तव ललिताने भूवे ही आरंभ

वसं. श्रीगुरुजी सांकह्यो जो श्रीस्वामिनीजी धरपधारत हैं
 २२ तव श्रीगुरुजी ने कछो जो हेलालिता पे सो मेरो कहा
 पराधहे सो आप धर को पधारत हैं तव लालिता ने कही
 जो निहारे हाथ की पिचकारी मांगत हैं सो तुम ही चालिके
 हे आगे तव श्रीगुरुजी श्रीलालिताजी के संग पिचका
 री रैन को चले हैं सो जव जाय श्रीस्वामिनीजी के पास ग
 डे नये तव श्रीस्वामिनीजी सो लालिताजी ने कही जो
 न की पिचकारी चहोत सुहरतुं मलेह तव श्रीस्वामिनीजी
 षोडशे डार के मत गजनी ही डरि के श्रीगुरुजी को मोह
 ल मां पिचकारी हती सो पकरे तव श्रीगुरुजी धोडे ता
 ही दोऊ परस्पर बल करन लागे तव लालिताजी ने श्री
 स्वामिनीजी सांकही जो की रतजी की ओर मेरी अपनी
 त वात मषोइयो अव पिचकारी मति छेडियो इतकी ओ
 र मधुमंगल ने कहा मैया श्रीकृष्ण श्रीजसोदाजी श्री
 नंदरायजी की अपनी मेरी हांसी मति कराइयो काहे
 तो पिचकारी मति छेडो तव श्रीगुरुजी ओर श्रीस्वामि

नीजी आपुस में दोऊ परस्पर बल करन लागे सो श्रीगुरु
 जी की फेंट ते मुरली गिरी सो कोसी नै देवी नांही एक श्री
 चंडावलीजी ने देरी तव आपनो रतन पचित के कनक
 मि पर गिराय दीनो पाछे कंकन के मिस के कन मुरली
 दोड ले के आपने निकुंज मंदिर में पधारी मन में चउतो
 आनंद मान्यो तव मुरली के मिस मरूप धारेंगे सो
 कंकन की फूलन की सिज्या ने कंकन के सांमिनी फूल
 लन की माना अरगजा वीरा सांमिनी सिध करि द्वार
 पर विराज के श्रीगुरुजी को मारग देखन लागी इहां
 श्रीस्वामिनीजी ने रो सो रुट को दीयो सो पिचकारी श्रीगुरु
 जी सो छीन लई तव लालिता द्विगोपी सब तारी दे के हं
 सी जो नंदन नंदन हारे तव मधुमंगल बो ल्यो नलें नैया मे
 रानां मषोयो जो मेरो मत्र होइ के हाथो तव श्रीगुरु
 जी बोले जो मेरो जितनो बल हतो सो कीनो मेगो पिन सो
 सदा हास्यो हूं तव सब हसे तव लालिताजी ने जाइ के श्री
 बलदेवजी कूप करि के छिर के मुख मांडो ओर श्रीस्वामि

वस. २९ मिनीजीनें श्रीगुरुजीको मुखमाझो छिराकिकें तव
 श्रीगुरुजीनें श्रीस्वामिनीजी सो फाँछो जो तुमनें अप
 नो मन जायो करिलीयो अब हमको धोडो तव श्रीस्व
 मिनीजीनें कही मुरली गहनें धरो तो धोडो यह सुनि कें
 श्रीगुरुजी अपनी फेरे में देखे तो मुरली नाहीं तव
 सवन सो पृथ्वी जो मेरी मुरली कहंगी पाछें सवन
 के तहां देखे एक श्रीचंद्रावलीजी के तहां न देखे तव श्री
 गुरुजीनें अपने मन में विचार कीयो जो श्रीचंद्रावली
 जी मुरली लेंगी तव श्रीगुरुजीनें श्रीस्वामिनीजी सो
 कछो जो तुम मांको धोडो जो तो मेतुं मम मुरली जाये हें
 एक वन में धारिकें नालिआयो हें तहां हो जाऊ तो मे
 ले और जाइ तो नहीं मिले तव श्रीस्वामिनीजीनें कही तो
 तुम वचन देहु कव आवोगे तो मे धोडो तव श्रीगुरुजी
 ने वचन दीयो जो मे अच कांसी खन में आऊंगा ऐसे वच
 न दे कें श्रीगुरुजी श्रीचंद्रावलीजी की कुंज में पधारे
 तव श्रीचंद्रावलीजी श्रीगुरुजी कूं दोष बहुत आदरस

नमो न कर सिज्या पर पधराय नाना प्रकार की सांमि श्री
 अपने मनोर्थ की अंगीकार कराय नाना प्रकार की रीति
 विपरीत आदिर सनांदिक कराय सगरो मनोर्थ पूर्ण की
 या इहां सषासव श्रीगुरुजी कूं पुकार नलागे सो श्रीचं
 द्रावलीजी की कुंज में एसी सधन ताहे जो कोरी पावे नांही
 तव सषासन को सुनद श्रीगुरुजीनें सुन्यो सो श्रीचंद्राव
 लीजी सो देखे जो मांको कोरी पुकारत है तव श्रीचंद्रावली
 जीनें कछो जो मेरी निकुंज में काहू की गम नांही है तुम इ
 हां नय सो विराजो ये मेरे इहां के पसु पंछी हें ससार
 समोर को किला इत्यादिक मनुष्य की बोली बोलत है पा
 ते और सदेह मति करो यह सुनि कें श्रीगुरुजी हसे ओ
 र मन में कहे जो मेरे राख के लीये ऐसे वचन बनां यके कह
 त है पाछें श्रीचंद्रावलीजी के जितने मनोर्थ हते सो सच पू
 रन करि मुरली ले कें श्रीगुरुजी श्रीचंद्रावलीजी की चिं
 ता हरिकें पधारे सो अपने सषासन के जूथ में आरे जब
 श्रीवल्लभजीनें पूछ्यो जो श्रीकृष्ण कहां गयो ह तो तु

वसं
६०

मकोसपाहुं दतहें॥ तव श्री गगुरजी कहे जो राऊजी में गोपा
जनके लिये फगुवाले नगयो हु तो॥ तहां बीच में श्री नंदरा
यजी मिले तिनने बेलकी वर्ता पूछी ही॥ सो उन सो में सब
कही॥ तासों मोको बहुत अवर लागी हे॥ पाछे सुवल को
फगुवाले नघर पगयो॥ सो सुवल देखे तो भंडार के आ
गे श्री य सो राजी गयी है॥ तहां श्री य सो राजी ने सुवल
सों पूछी॥ तव सुवल ने बेल को सगरी वस्त कही॥ तव श्री
य सो राजी परम आनंद पाइ नां नां प्रकार की सांभली स
खी सो लिवाइ के आहुं पधारी॥ तव मांभ में जसो
जी सुवल सों पूछे जो तुंम मेरे कहै या का आछी जाति
राखियो॥ मेरे आन है॥ तव सुवल ने कही मे अपने आन
होते अधिक रक्षा करत हो॥ तुम्हारे पुत्र के जीवन में
हज में प्रसन्न रहत हैं॥ तव हरि बतें गोपिन ने श्री य सो रा
जी हूं आगत रोषि श्रीवल देवजी को श्री गगुरजी को छो
डि मुष में गुलाल लपो ह तो सो अचल सों पांछि के वा
गा पागा आरही पाहिय॥ सब न्यायी गयी होइ रही॥ इत

न में श्री य सो राजी श्री गगुरजी को निकर आये के अपनी गो
द में ले मुष चुंबन करि वह तही प्रेम सों सन्मान की पो॥ पा
छे अपने हस्त कमल सों श्री गगुरजी को सांभली आरोगा
ते॥ तव सगरी सखी गोप सखा आये के कहे जो श्री य सो
राजी तुम्हारे पुत्र कूं वो होत छिर के नाहीं हैं॥ तव श्री य सो
राजी ने गोपान के ऊपर बहुत प्रसन्न होइ मेवा मगरी
देना श्री प्रकार के आभूषन वस्त्र पाहियारे॥ सो ये गोपिन
कवच एतान के श्रीवल देवजी सों रत्नो नगयो॥ तव कहे
जो हे जसो राजी अब ही तुंम आरी हो॥ तव हम आरत
। धूम धूं दे हैं॥ नाहीं तो रोऊ वधे हते॥ यह सुनि के श्री
य सो राजी ने गोपिन पे काप की पो॥ तव श्री गगुरजी श्री
य सो राजी सों कहे॥ जो तुंम गोपिन के ऊपर क्यों को पकरत
हो॥ दाऊजी को भाजी ने छिर के हैं॥ आर मुख मांझो हे ता
ते दाऊजी को तो लाज लागी हे॥ ताते नाभी जी सों तो कछ
चलत नाहीं॥ कहते वेराजा की बेटी हैं॥ ताते गोपिन के ऊप
र को पकी पोहे॥ गोपी तो मोको बहुत आछी जाति राखति

कसं-
८१

सबसे हैं तब श्रीयसोदाजी श्रीगुरुजी को मुष चुंबन करि के
कही जो पुत्र तू सांचो है राऊजी मूरे हैं यह सुन के माता
एतको सनेह देषि के श्रीवलदेवजी ने हाथि दियो सोय
हकुलाहल श्रीनंदरायजी ने लुंन्यों जो श्रीयसोदाजी के
लमें पधासी हैं तब श्रीनंदरायजी सोर ह्योन गयो सो
आप हूँ बेल में पधारें तब हरिते श्रीगुरुजी देषिता
रीव जाइ के कहें जो बाबाजू आवत हैं सो श्रीयसोदाजी
तो चार ओठ के धूँध दे के बेनी श्रीनंदरायजी ने
श्रीगुरुजी को मुषारा विंदे देव्यो सो नानंद में देह की सु
धिन रही सो श्रीयसोदाजी के पास जाइ श्रीयसोदाजी
की गोद में ते श्रीगुरुजी को उमर मुष चुंबन की पो तब
श्रीगुरुजी कहे जो बाबाजू मै पाजी ने नाना भूषन वस्त्र स
कल गोपिन को दीऐ हैं तब श्रीनंदरायजी प्रसन्न होइ के क
हे जो में तुं मको राऊजी को सखा गोप सवन को पहिराऊं
गो ऐसे कहि अत्यंत सुंदर आभूषन वस्त्र श्रीनंदरायजी
ने श्रीगुरुजी श्रीवलदेवजी सखा गोपन को पहिराऐ के

रगोपिन को इसरोफ गुवादीऐ वस्त्र आभूषन मेवा भिन्न
री पाछे राज के बालक हृदय तरनहु ते सब को जे सोमनोर्ध
हत ते सोही पहिरायो पाछे श्रीनंदरायजी श्रीगुरुजी
को गोद में ले श्रीवलदेवजी को अंगरी लगाइ लीऐ सभी
सब वस्त्र पीत गावन लागी मधुमंगलानिर्तकरन
सो यो राऊ दिसे के बाजे वाजत हैं मानों परमानंद आ
पुही आरव सवन के हृदय में होइ के बेलत हैं तब श्रीनंद
रायजी के ओर श्रीयसोदाजी के मन में यह आशी जो पा
हैं तो तह मारे कहै या को न्याह होइ तो परम आनंद हो
इ पाछे विचारी जो अबही हालह मारो कहै या बालक
हे कष्ट समझत नाही मुष में इधकी सुगंध आवत हैं
स्वक बडो होइ कष्ट समुझतो सगाड़ी करिये या प्रकार
श्रीनंदरायजी श्रीयसोदाजी मनोरथ करत श्रीवलदेव
जी श्रीरेवती जी सब सखा समाज साहित धर को कले पा
छे मंदिर में पधराय के सिंगासन पे श्रीगुरुजी श्रीस्वा
मिनी जी को पधराय एक सिंगासन पे श्रीवलदेवजी श्री

रवतीजीकोपधराय॥ नानाप्रकारकीसांभरीश्ररोगाय
सेनकराय॥ याभातिहोरीवसंतषेलतहें॥ कहेंवहंहोरी
मेंश्रीगुरुजीपहलीलाकरतहें॥ जोगोपिनकेधर
धरात्रिसमपाछिधिकेंतजमेंपधारतहें॥ तहांतजभ
तपरमचातुरहें॥ सोगुरजनफेभेषकरिकेंदियाबुझाय
न्यारेधरमेंसेनकरि॥ श्रीगुरुजीकेमिलिनकोंस्म
रनकरतहें॥ तातेश्रीगुरुजीभक्तनकेमिलनार्थेवि
ष्टवारैतैधरमेंआइकेकिवारबोले॥ सोपाहिलेलेके
भक्तिवाताइराषतहें॥ जोफलानेचिकनिकूचीधरि
वाहिरतो॥ बोलिकेंआइयो॥ सोश्रीगुरुजीकेबोलेके
किवारहोलेबोलिकें॥ पाछेकिवाइगाइजनकेवि
कटपधारे॥ सोभक्तनारेनिद्रामेंपोठे॥ तवश्रीगुरु
जीउहभक्तकेपाइकेअंगमरारिजगावतहें॥ सो
भक्तिनिद्रातेचोकिउचिचेविमधुरेवचनबोलेजोयह
कोनहें॥ तवश्रीगुरुजीकहेजोचुपरहोमेहीहों॥ को
रीजागेगा॥ यहश्रीगुरुजीकीमधुरवांनीसुनि

केंश्रवनमेंवहतमधुरलागी॥ अंगअंगसीतलहोइगयो
श्रीगुरुजीकोअपनीगोरुमेंवेगारिहृदयसोंलगायनानां
प्रकारकीलीलाकरि॥ हृदयकोतापनिवारनकीयो॥ तवस
वराहोनलाग्यो॥ तवश्रीगुरुजीभक्तनकेधरतेश्रीय
सोसगीविधरायिष्टवारैतेंआइकेसिज्यामोहिरमेंपोठे॥
कोरीगोरयाकरिषेलतहें॥ औरवहतलीलाकरतहें॥ सो
सुखसिद्धनकोअपधरतहें॥ सूत्रचंदनकोतिलकवडोके
राहें॥ तवसीकीमालाजग्योपवीतपाहिलेकेपुसतकले
पाउकापरचढिधोतीउपरनांपाहिलेकेबडीमालाहाथमें
लेकेतजमेंकोतुकदेषनकोपधारतहें॥ सोहषभानजीके
धरपधारे॥ आगेयहरीतहतीसोहांसनकोपोरीपरदोके
तनाहीहते॥ कहेंचल्योजाउ॥ सोकीरतजीकीपोरीछोडि
के॥ तहांश्रीस्वामिनीजीसाखिनसाहितअनेकमनोर्थ
विचारश्रीगुरुजीकेमिलनकोकरतहती॥ तहांविप्रने
फरिफेपधारे॥ सोविप्रहोविश्रीस्वामिनीजीसाखिन
साहितपालागनकरिकेंचोआसनाविष्णुपवेगयधरप

शपने वेद्य सो एज न कीयो ॥ तब ललित बोली जो चिप्र
जीतुं मारो नेष तो बहुत सुंदर ॥ कष्ट गुन तु मारो मेहें ॥
पोथी माला बजी बजी लिये हो ॥ तब श्री गकुरजी बोले जो
मेरे में सव गुन हैं ॥ जो तुं म कहो सो सी सध करि देऊ ॥ तब
ललित जी ने कही एक दो प गुन तो तुं म अपन कहो ॥ त
ब श्री गकुरजी बोले जो एक तो मो मे यह गुन हैं ॥ जा ब
सुको जो डूबी हो र ताही को मिली लाइ देह ॥ और जल में
को मन जाइ वेहूं हो र तहां एका छिन में ले जाऊ ॥ कोश
जाने नोही ॥ और तीनों काल की बात ताइ देह ॥ तब श्री
स्वामिनी जी बोली जो हम को तीनों काल की बात बता
देऊ ॥ आगे हम कहां हते ॥ अब हम कहां करत हैं ॥ और
आगे कहां होइगो ॥ यह बात बो तो सो वेहा म हन हो
जब श्री गकुरजी ने कही जो पहिले तुं म श्री नंदराय जी
के पूत सो ॥ सगरी मिली हो ॥ अब बाही सांवरें को मिल
नको ॥ सगरी विचार करति हो ॥ आगे वही कृष्ण तुं म को
मिलेगो ॥ यह सुनि के श्री स्वामिनी जी रंच कला जितन

सी ॥ और मन में व होत प्रसन्न होइ विप्र के निकट ॥ अथ केव
रन पकरि के फेर पृथ्वी न सी ॥ हैं पंडित तुं म वडे ग्यानी हो ॥
कहो हमारी प्रीति तो श्री नंदराय जी के पुत्र सो लागी हो ॥ प
रंतु वह कारो कपटी बहुत सुनियत है ॥ कष्ट बाकी हम प्रीत
हम पद सो कहो ॥ तब श्री गकुरजी कहे जो डहनं दुख मार
की प्रीत बहुत है ॥ सरां तुं म सो संकेत ही चाहत है ॥ तब श्री स्वा
मिनी जी नाना प्रकार के वस्त्र पहिराय के सां भिग्री औरोगा
य के फेरि पृथ्वी जो अब श्री कृष्ण जी कवामिलेंगे ॥ तब कही ॥
अब ही सिज्या मंदिर में चलो मिली लाइ देह ॥ तब सिज्या मंदिर
में जाइ बाहन नेष डतारि ध्यान करि नाना प्रकार की ली
ला करि खगरे जल न को आनंदि दिखे ॥ या प्रकार श्री गकुरजी
हज में ली लाकरत है ॥ कवहं श्री स्वामिनी जी के हाथ में चूरी
पूरा नीहें जांति होइ तो ॥ मनिहार के नेष धारि नाना प्रकार
के रंग की चूरी ले के हष भान पुरा की गति न में पुकारत है ॥
जेन वकुं मारी हज जकहे तिन ही को पहिरावत है ॥ सो मोल
बहुत सरस फरि के नोही करत है ॥ श्री स्वामिनी जी की स

। वीसुं निक्के कीरतरांनी जी सो क हा ति हे जो चूरी चारो आ
 यो हें तुम्हारी ते टीकी पुरांनी मरी हें पहिरा वो गी ॥ तक्की
 रत जी क हा ति हें बुलाइ ला वो ॥ तव भीतर जाय चूरी छो
 टी छोटी श्रीस्वामिनी जी लाइ करि पारी ॥ तव कीरत जी
 अपनी गोद में लें ॥ पहरावन लागी श्रीस्वामिनी जी को
 तव श्रीस्वामिनी जी को ॥ तव श्रीगुरु जी जानें जो मेरे ह
 ता पस्यर न येइ न को दिसा और ही होइ गी ॥ और की
 त जी पास हें यह के सेवनें गी ॥ तव श्रीस्वामिनी जी पाल
 भाव करि के रुदन कर कही जो मैया में मरू चूरी न पहरेंगे
 मेरो हाथ डूबे गो ॥ ताते हें ललिता तू मैया को स मुझाय
 तव लालिता जी ने कीरत जी सो क ही जो यह तुम्हारे पास
 चूरी न पहरेंगी ॥ तव कीरत जी ने क ही जो हललिता तू पा
 सवे गि के कि वाड लगाय ली जो ॥ कोरी आवे ना ही ॥ में
 घर में कारज करन कूं जात हूं ॥ तव कीरत जी तो अपने घर
 हकारज को गरी ॥ और ललिता जी कार के कि वाड लगा
 य श्रीस्वामिनी जी को ले के वेगी ॥ तव श्रीगुरु जी चूरी प

हरावन लागे ॥ और अपने क भाव हस्त में करन लागे ॥ त
 व कां मकी उतपत भरी ॥ तव ललिता जी सो श्रीस्वामिनी
 जी ने क ही जो यह चूरी पहरावे हे सो न दकु मार हे ॥ तकि
 वाडि बालिके वाहिर वेगि ॥ तव ललिता जी कि वाड बालिके
 वाहिर ॥ ॥ होऊ स्वस्व नाना प्रकार की लीला करी
 भाते भाते की लीला करी ॥ अपने करंग की चूरी पहिरा
 री ॥ पुरे विराहो इधर पधारो ॥ कवहं काजर बंदी लगा
 इलह गा सारी चोली पहिरना इन को नेष धरि नहर
 निक कि सी ले महावर ले प्रभान पुरा को आरी ॥ नाही
 चूरी की नांश श्रीस्वामिनी जी के के स सुधारिके ॥ महा
 वरचरन में लगाइ के नाना प्रकार के विहार की ऐ ॥ इत्या
 दिक भावनां करिये ॥ कवहं दान को मिसते धर्म धारी
 श्रीगिराज की परसखान साहित आइ वेठत हें ॥ कवहं
 सां करी खोर इत्या दिक कि नाने वृज भक्त हं दान को मिस
 करिके सुद्ध मधुरामिष्ट गौरस ले के अपने क भाव साहित
 चाह जोरी करे ॥ रु छली लागान करि पधारत हें ॥ तव सां

करीषोरमें आइसगरीधसी॥ तव चारों ओर तें श्री ग
 कुरजीभमें गमां फेरा बांधें सषान सहित॥ पीतांबर
 हरि वैजेंती माला चरनारविंद परस्पर मोर चंद्रिका धरं
 मकराकृत कुंडल कपोलन परलंकृत लकत हें॥ श्री हस्त
 में लंकृत मुदली लीयें॥ मार्गमें लाकड़ी आड़ी करि श्री
 सांमिनी जी श्री चंद्रावली जी आदि सवन को रोके॥ श्री
 मुख सांफ ह्यो जो हमारा रोचन मारि के सदा निकस गये
 हों॥ सो आज सगरो दिन को लेइंगे॥ तव श्री सांमिनी जी
 न कहि जो तुम किन पर सान पहि सोंहे॥ तव श्री गुरु जी
 कहे जो श्री नंदराय जी सब के राजा हैं॥ सो हम को सग
 र राज को राज दीयो है॥ यह सुनि के सगरी हसी॥ तही
 वही नंद जो हमारे बन की घासन में कोर खे बारी कोरा
 पे है॥ कंस के डर नंद य सो राहें आइ हमारे पता की
 बां हसो वसाये है॥ ताही के तुम पूत हो॥ और कुल की
 रीत है॥ तिन को पालन करिये॥ जो रीत न क वडा री पा
 इ के मां पें चडे॥ ताते बहुत गरी सो माति बोलो तव श्री

गुरु जी बोले जो सुधें सान दे के पावें जाइ पुकारियो॥ इ
 हांवन में कछू बोलो गी तो सवन के भूषन वस्त्र मली भा
 तिल टिलेंगे॥ और वह कंस तो बांता बति हो सो आप ही
 मारि रह्यो है॥ इस पांच दिन और जीवेंगे॥ यह सुनि के हंसि
 के श्री सांमिनी जी न कहि जो अब सुनि कंस को गरी रित
 हो॥ और नंदराय को भाजे डोले है॥ इनो बलि दिषा
 वत हो महान के भाजि के इहा स्थि योगिर राज की कं
 दरा में और सीवडा री करत हो॥ तुम वेही होत न कहि
 साधन के लिये भूषे होइ धर धर में चोरी करता फिरत हो॥
 ऐसी तुम्हारी कडा री है॥ तव श्री चंद्रावली जी बोलीं जो
 कजान रहे॥ हम कहो किरां नो माल ले के जात है॥ सो तुम
 सान मांगत हो॥ तव श्री गुरु जी बोले जो तुम्हारे पास मा
 ल इत नो है॥ इत नो कहूं नां ही है॥ कोरी के पास श्री फल॥
 कोरी के पास सुपारी॥ कोरी के नारी पर॥ कोरी हार म॥ को
 री अनार॥ कोरी के पास कोरी प्रकार के रतन मेवा फल फ
 मल इत्यादि सब हमारे लाय कहें॥ हम ले के जान रहि

वसं.
९६

गं॥ तव श्रीस्वामिनी जीवोली जो तुमवहोत पीतलो रवो
लतहों॥ हमारे आभूषण की और मनराषतहो॥ सो
हमारे एकनग को मोलहे॥ सब गाइने रालय की वैभव
एक गोर करोगे तो हं पुरो नांही पड़ेगो॥ ताते जेसे तुमा
रे मावा पजारी तबलेहें॥ ताहीरीत तुमहं चलो॥ और
जो तुम भूषे भरे हो तो विनती करिकें मांगो॥ १॥ हमक
हे सो करो तुमको थोरो सो रही तो रहेहें॥ तव श्रीगुरुजी
कहे मोको भूषवह तलागी हे तुमको सो वरों नवल
लिता जीने कहि हमारी प्यारीजू के भूषणों तननां नि
रकी नांही ना चो तो हम तुमको रहे॥ तव श्रीगुरुजी
नेक तांनतरंग सो निरंतर करिकें मोहोत॥ और कोरे
लोटे के दही इध पीवतहें॥ तव श्रीस्वामिनी जी श्री चंद्रा
वली जी सहित नांनो प्रकार की स्वांमिनी आरोगाइके
संग सगरे सषन कुंइध को भाजन देतहें॥ और कही
नीचें नाइखगरे बलके पास आरोगो॥ तव सगरे सषा
रही आरोग नहूं जातहें॥ २॥ इहां श्रीगुरुजी सगरी स्वां

मिनी नके संग नांनो प्रकार की विहारलीला करन लागें॥ इ
त्यादिक भावदांन ही को विचारें॥ कबहूं श्रीजमुना जलके
पनघट पर कबहूं भूआके पनघट पर जाइके काहू की उ
दुटी चोरतहें॥ काहू की न्हांत डोरी चोरतहें॥ चोली वखादि
क चोरतहें॥ कोरी की गागरी कां करीतें फोरतहें॥ काह
का गागर नहि उगइ देतहें॥ और कांन में मधुर वचन
कहिहें जो होरी आशीहे॥ कोरी वजनत के लीये आपु
श्रीजमुना जी में पेरिकें कहतहें॥ एरी भइसी तव होतहे॥
तुलको पारि मम तिकरे॥ मोको गागरि में भरि देहें गो
या प्रकार गागरि नरि अंग पर सकरेहें॥ और कोरी वजनत
नके आगे होइके कां करी वीन डारतहें॥ तिरहे कटाक्ष च
लाइके मनको हारलेतहें॥ काहू की बलाय लेके आंचल
वारतहें॥ काहू की बलाइ लेके बात न लगाइ चुबन करत
हें॥ तहां कोरी वजनत में हे जो तो प्रसन्न होतहें॥ श्रीगुरुजी
को फकरिकें भली जाति आलिंगन करि सरखी बांग पर
सतहें॥ तनकी तापामि वतहें॥ और कोरी वजनत में

वसं.
९७

लज्जा मान होइ के गुंजन के डरतें अत्यंत डरत हैं। वो
लत नाही हैं। जब श्री गुरुजी अत्यंत लंसी करत हैं न
रीगा गरबोरत हैं। पीछे तें चोली के बंद तोरत हैं। क
धूकान में वचन कहत हैं। तब मन में तो अत्यंत सुखी हो
त हैं ऊपर तें जो हम चढा परिसाइ का के वचन बोलत
हैं। जो श्री नंदरायजी सो श्रीयसोदाजी स्व कहि रहि
जी। हम सो हांसी मसकरी मति कि पोकरो। या प्रकार
अनेक वचन कहत हैं। तिन भक्तन के पीछे श्री गुरुजी
बहुत पीछे अनेक वाके वचन सुनि के मन में प्रसन्न होत
हैं। कहें श्री स्वांमिनी जी सो कहति हैं। जातु मको मेरी
मैया जी ने तुला रही हैं। सुंदर आभूषन वस्त्र हैं। या
प्रकार भुराय के लालितादि कसपी सहित श्रीयसोदाजी
के धर्य धारत हैं। तहां मार्ग में अनेक छिहास्य विनो
द करत जात हैं। काहे तें होरी का दिन है। ताते कधूक नि
लजता है। कहें गुंजन में वरि के नां नां प्रकार की वि
हार लीला हं करत हैं। सबन के मन कूंहरत हैं। या प्रकार

सगरे खज भक्तन को होरी में सुषरेत हैं। रात्रि दिन यही प
रम रहें। पाछे जसोदाजी घर एक सिंगासन पर श्री ग
ुरुजी श्री स्वांमिनी जी के पधराये। एक सिंगासन पर श्री
बलदेव जी श्री रेवती जी के पधराय नां नां प्रकार की सांमि
नी सेन भोगादि आरोगाय सब गोपी गोपन को नो जन
कराय। सब गोपी गोपन को विदा करन लागे। तब गोपिन ने
नंदरायजी सो कहि जो श्री वृषभानंजी ने विनती करि के
कह्यो हे जो काल्ह होरी डां डोरोप नो हे सो कृपा करि के तुंम
पधारोगे। ओर हम हूं आवेंगे। तब श्री नंदरायजी ने कह्यो।
जो हम अवश्य आवेंगे। तब या प्रकार गोपी विराजें। पाछे
श्री नंदरायजी श्रीयसोदाजी सो कह्यो जो कह्यो यां को अंम
बहुत भयो है। ताते अवसेन करारयो। इहां कीरत जीने आ
रती डार पर करि सेन भोग आरोगाय के सिज्या पर पोछाए
पाछे प्रातः काल भयो। जब श्रीयसोदाजी अनेक जतन की
ए। श्री गुरुजी जागें नांही। पाछे कहि जो आज होरी डां
डोरोप नो है। सो दोख्ये को न जीते को न हारे तुंम वेगि डगे।

इतनी सुनि चोकि उठि कहें मै या मेरी बिचकारी कहाँ है ॥
जवेगि क्यो जमायो ॥ तहां या पद को भाव जांनियें ॥ राग संभ
कसी ॥ जागि कह्यो जननी सो मोहन ॥ आजु कहलं मोहि वेगि
जगायो सो कारज कहिये सब सोहन ॥ १ ॥ तब जसु मति क
ह्यो आजु पूरन दिन पूनो सुषकी रासी ॥ अंजो रोपन मंद जां
यगे संग लीये हज वासी ॥ २ ॥ उत हष भांन इते नंद रासी हो
उपरगी भारी ॥ इत प्यारो उत प्यारी को रल को जीते को
री ॥ ३ ॥ ताते विन मोहन बल दाऊ सो कहिली जे श्री
गोपले हर खवारी गोपी सब वसकी जे ॥ यह सुनि ल
कि उगे गिर वर धर तब मेपी वो इत वाचें ॥ देखे आजु पे
ल होरी को मांखन मोहिष वाचें ॥ ५ ॥ तब जसु मति को
पाल लाल को उवटिन्हवायो प्रीत ॥ करत सिंगार परम
रुचिकारी हज वासिन के मीत ॥ ६ ॥ यह सब बात जांनि
हज वनिता चली सिंगार सिंगारी ॥ मन हरषत सो मित
अति सुंदर कोटिकां मवालिहारी ॥ ७ ॥ सब मिल एक
गेर कै आंसी ॥ जसु मति ग्रह के दार नीतर जाइला इला

लन मुष निरखत हरषे लोचन चार ॥ ८ ॥ सेनन में सब नेंद
कह्यो तब मुसिकार मोहन मन लियो ॥ रासिक प्रीत मजांन
तन्त्रंतर गति मन मनयो खवाकियो ॥ ९ ॥ यह भाव विचार नो
तब श्री यसोदाजी श्री गुरुजी कूं मंगला नोग आरोगाय
बस्मान्तराय अंगार करि पालनां गुंलां वनलागी इत
नेम सब गोपी गाल हज नत श्री यसोदाजी के धर आ
रे ॥ तब श्री स्वामिनी ने श्री गुरुजी सो सेन ही में कही जो
अवतुं म पालने ही में लो गे के होरी बेलो गे ॥ सो यह सु
नत ही श्री गुरुजी ने श्री यसोदाजी सो कह्यो जौ मै पारा
ज नोग कव आरोगा वेगी ॥ तब ताही समय श्री यसोदाजी
श्री रोहनी जी राज नोग पार मे साजी के ले आरी ॥ साखि
न सहित श्री स्वामिनी जी धरवी न सहित आ रही जांति
आरोगाय पाछें बीर ही ऐ ॥ तब श्री नंदराय जी श्री गुरु
जी को गोद में उठा पले श्री बलदेव जी को अंगुरी सो लगा
इली ऐ ॥ उपनंदादि नौ नंद हड्ड हड्ड गोप और अपने प्रो
हित हों ॥ लन ले आगे वे दधुनि होती बले पाप्रकार

कस-
९९

सो श्रीनंदरायजी पधारें ॥ ओर श्रीयसोदाजी सब गोपीन
के जूथ में श्रीस्वामिनीजी को गोद मोलियें वात्सल्य नाच में
मग्न होइ होरी को डांडो रोपन गांम के गोंडे में आये ॥ उतते
श्रीहृषभांनजी की रत्नजी आछें वसन आभूषण प
हिर के गोप हां हन के जूथ में श्रीहृषभांनजी पधारें ओ
र कीरतजी गोपिन के जूथ में हां हनी वेद धुनि करति जात
हैं ॥ होरी को सब साज ले होरी पास आए ॥ ताही समय में
हन दोऊ ओर के हां हन एक बजे का गल बोहने ताक मध्य
में गढो कियो ॥ ताके ऊपर धुजा बांधी ॥ चाहते श्रीयसोदाजी
तहार जा निबे कै लीये ॥ तहां हां हन सो बंद पगय श्रीनं
दरायजी श्रीहृषभांनजी उरि के प्रार्थना करि रोव जे देन ॥
अरग जा छिर कि श्रीरगुलाल सो छिर की के पाछे श्री
नंदरायजी श्रीहृषभांनजी परस्पर मिले ॥ उपनंदादि आ
ठ भारी श्रीहृषभांनजी सो मिले ॥ पाछे श्रीयसोदाजी श्री
कीरतजी अत्यंत प्रीत सो मिलि परस्पर ॥ सो के सी सो भा
भरी है ॥ मानो अनंद ओर प्रेम दोऊ सस्य धार के आ

पुस में मिले हे ॥ ओर श्रीनंदरायजी के घर के गोप ॥ ओर श्री
हृषभांनजी के घर के गोप मिले ॥ पाछे हज्रत कुं मारि
का ओर गोपी मिलन लांगी सो सक्को मिलन रोखि के श्री
स्वामिनीजी ओर श्रीचंद्रावलीजी सखिन सहित रोमांच
होइ ॥ जो हम श्रीगकुरजी को मिलेंगे ॥ ताही समय में
श्रीगकुरजी ने हां हनी गोपी हती तीतने सस्य सखी के ध
रि के सवन में मिले ॥ सवन में ता पहरि कियो ॥ पाछे श्रील
लिताजी ने श्रीयसोदाजी के आगे श्रीगकुरजी को पोर
सा छिर कि के श्रीयसोदाजी सो विनती करी ॥ जो श्रीय
सोदाजी श्रीयसोदाजी कूं मेरी गोद में दे उतो तुम को
छिर के ॥ तब श्रीयसोदाजी ने श्रीगकुरजी को ललिता
जी की गोद में दीए ॥ ताही समय श्रीस्वामिनीजी ने सखि
नों आग्यां दई जो श्रीयसोदाजी ओर श्रीनंदरायजी
श्रीवलदेवजी आदि सवन को छिर के ॥ तब गोपी सब दो
र के श्रीनंदरायजी श्रीयसोदाजी श्रीवलदेवजी सब व
धी जेते गोप हते सो सवन को छिर के ॥ सो श्रीगकुरजी

हिंदी
व. सं.
१००

नें जान्यो जो ये सषी सव मेरी मै या की हां सी करेगी ॥ पह जो
निकें मध्यमंगल श्री रामा इत्यादि सखन सों कहें जो तु
म जाइ के श्री हष भान जी की ओर की रत जी की गां विजो
रो ॥ तव सखा हते सो श्री हष भान जी कुं ओर की रत जी कुं
होऊन को धोरि पकर के बां चि के गां रजोरी ॥ रहा सखी
नेने श्री नंदराय जी की ओर श्री य सो राजी की गां विजो
री ॥ तव श्री नंदराय जी श्री य सो राजी रच कला जित न
पावें मन में प्रसन्न भए जो श्री नंदराय जी ने लभ को
है या ए सो पुत्र ही यो तव हम को शत नों सुख मयो है ॥
अपने परम भाग्य का मानो ॥ तव श्री स्वा मि नी जी ने
श्री गुरु जी सो कह्यो जो तुम्हारे पिता जी नंदराय जी की
श्री य सो राजी वडो निलज है ॥ जो इहां सखन के आगे गां
रजोरी है ॥ तव श्री गुरु जी कहें जो हम तो रस गां म के
जिमी दार गरी बहें ॥ परंतु तव भान जी तो वज के मे वड
राजा कह वत है ॥ सो आजु निलज होइ के गां रजोरी है ॥
ओर हमारे संग के सखन सों हां सी म सखरी करत है ॥

तव श्री स्वा मि नी जी पावें दोखिल जा पाय सखन सों कहें ॥
जो पह तो उचित है जो श्री नंदराय जी की ओर श्री य सो राजी
की गां विजोरी है ॥ या मे तो हां सी पूरी नां ही परति ॥ परंतु श्री
य सो राजी की ओर मेरे पिता की गां विजोरो तो वडी हां सी हो
इसी ॥ तव सषी हती सो श्री य सो राजी के पावें चली ॥ सो य
होइ श्री गुरु जी नें जान्यो जो ये मेरी मै या की हां सी कि
रेगी ॥ पह जो निकें अपने सखन सों समुझाइ के कहें जो न
बने सो करो जो मेरे पिता सो की रत रां नी सां गां रजोरो ॥ त
व सखा श्री की रत जी को लेन चले ॥ ओर सखी हती सो
श्री य सो राजी को लेन चली ॥ इतने में सखन हष भान जी
के पास सजाइ के सनो गुलाल उडायो सो अंधारो होइ रा
यो कधू अपनो पया पो सूके नां ही ॥ तव मध्यमंगल की र
तरा नी को पकर के होरी के डांडे पास लाइ गडी करी ॥ त
हां श्री य सो राजी को ने ख कनाय मध्यमंगल श्री नंदराय जी
सों कह्यो जो तुम्हारे श्री कृष्ण जी बुलावत है ॥ सो वे गि हो
री के डांडे पास चलो ॥ काहे ते श्री य सो राजी तुम्हारे रूप